प्रेरणा विचार

RNI No. : UPHIN/2023/84344 ₹ : 30

मार्च-2024 (पृष्ठ-36) गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

राष्ट्र जागरण का नया अध्याय

सरस्वती शिशु मन्दिर

सी–41, सेक्टर–12, नोएडा (गौतमबुद्ध नगर)

दूरभाष: 0120–4545608

ई–मेल: ssm.noida@gmail.com

वैबसाइड: www.ssmnoida.in

विद्यालय की विशेषताऐं

* भारतीय संस्कृति पर आधारित व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की शिक्षा।
* नवीन तकनीकी शिक्षा प्रोजैक्टर, कम्प्यूटर, सी.सी.टी.वी., कैमरा आदि की सुविधा।
* आर.ओ. का शुद्ध पेय जल, सौर ऊर्जा, विशाल क्रीड़ा स्थल व हरियाली का समुचित प्रबन्ध।
* प्रखर देशभक्ति के संस्कारों से युक्त उत्तम मानवीय व चारित्रिक गुणों के विकास पर बल।
* सामाजिक चेतना एवं समरसता विकास के लिए विविध क्रियाकलाप।
* विद्यालय को श्रेष्ठतम बनाने की दृष्टि से आपके सुझाव सादर आमन्त्रित हैं।

दिनेश गोयल	प्रदीप भारद्वाज	असित त्यागी	प्रकाश वीर
(अध्यक्ष)	(व्यवस्थापक)	(कोषाध्यक्ष)	(प्रधानाचार्य)

प्रेरणा विचार

वर्ष -2, अंक - 3

RNI No. UPHIN/2023/84344

संरक्षक
मधुसूदन दादू

सलाहकार मंडल
श्री श्याम किशोर, डॉ. अनिल निगम
प्रो. (डॉ.) हरेन्द्र सिंह

संपादक
डॉ. मनमोहन सिंह शिशौदिया

कार्यकारी संपादक
डॉ. प्रियंका सिंह

प्रबन्ध संपादक
मोनिका चौहान

समन्वयक संपादक
राम जी तिवारी

अध्यक्ष प्रीति दादू की ओर से मुद्रक/प्रकाशक डॉ. अनिल त्यागी द्वारा चंद्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा. लि. नोएडा से मुद्रित तथा प्रेरणा भवन सी-56/20 सेक्टर-62 नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास,
सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा - 201309
दूरभाष : 0120 4565851,
ईमेल : prernavichar@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा नोएडा की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा।

संपादक

इस अंक में

इतिहास लेखन की विसंगतियां और भारतीय दृष्टि-05

राष्ट्र जागरण में महिलाओं की भागीदारी -14

पर्यावरण में रचनात्मक भागीदारी जरूरी-24

जन-जन की होली -30

समान नागरिक संहिता की आवश्यकता.....07

सांस्कृतिक पुनरुत्थान से राष्ट्र जागरण.....08

मीडिया की राष्ट्र जागरण में भूमिका.....10

सांस्कृतिक पुनर्जागरण और युवा शक्ति.....12

ज्ञानवापी मुक्ति संघर्ष का इतिहास.....16

सनातन के संवर्धन का प्रतीक अबू धाबी मंदिर.....18

आवासीय निर्माण के क्षेत्र में आगे बढ़ता भारत.....20

संस्कृति और राष्ट्र जागरण की वाहक है हिन्दी.....22

अयोध्या में वही त्रेता युग.....26

श्रद्धा निधि समर्पण अद्वितीय आन्दोलन.....28

विशेष समाचार.....32

क्या आप जानते हैं?.....33

हर दिन पावन.....34

सनातन के संवर्धन का नया युग

सनातन कालातीत है। जब शारीरिक और मानसिक समस्याओं के निदान में अर्थशास्त्र, चिकित्सा शास्त्र और विज्ञान असमर्थ हो जाते हैं, तो वैज्ञानिक कसौटी पर स्वयं सिद्ध सनातन धर्म इस पर खरा उतरता है। सृष्टि का सबसे पुराना और जीवंत धर्म सनातन आज से नहीं, बल्कि अनंतकाल से 'वसुधैव कुटुंबकम्' और 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया' का पोषक रहा है। चाहे व्यक्तिगत जीवन हो या समाज जीवन या राष्ट्र प्रत्येक संदर्भ में खुशी, समृद्धि और शांति का जो दर्शन यहां है वह उत्तरी, दक्षिणी और पश्चिमी किसी भी मॉडल में दूर-दूर तक नहीं है।

अबू धाबी, संयुक्त अरब अमीरात में वसंत पंचमी के दिन एक भव्य और दिव्य हिंदू मंदिर का उद्घाटन हुआ। यह कोई सामान्य घटना नहीं है, बल्कि मानवीय इतिहास में सनातन संस्कृति के संवर्धन का एक और स्वर्णिम अध्याय है। इसके पीछे सनातन धर्म की महिमा, मूल्य और प्रभाव है। एक सामान्य नजरिये से देखें, तो यह पिछले कुछ दशकों के दौरान एक बड़ी उपलब्धि हो सकती है, लेकिन प्राचीन भारतीय इतिहास के गौरवशाली पन्ने को पलटने पर यह भारतीयता, एक कुशल नेतृत्व और हिन्दू धर्म की जीत है। जब कभी भारत अखण्ड था, तब सनातन धर्म की विजय पताका कमोबेश विश्व के एक बड़े क्षेत्र पर निर्बाध फहरा रही थी। तब देश, काल, परिस्थिति से परे राष्ट्र से हजारों किलोमीटर दूर भी हिन्दू धर्म, आदर्शों एवं मंदिरों की जय-जयकार थी। तभी तो इतने वर्षों बाद भी आज भी नेपाल, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, श्रीलंका, कंबोडिया, इंडोनेशिया आदि देशों में हिन्दू धर्म के मंदिरों का अस्तित्व और कई शहरों के नाम भारतीय परंपरा में होने के प्रमाण सहज रूप से मिलते हैं। इस तथ्य के अनेक उदाहरण इतिहास के पन्नों में भरे पड़े हैं। प्राचीन भारत के मौर्य साम्राज्य के महान सम्राट अशोक के शिलालेख, अभिलेख से भी इसकी पुष्टि होती है। इसके अलावा भारत से लगभग 5 हजार किमी. दूर कंबोडिया में 12 वीं सदी का विश्व का सबसे बड़ा विशालकाय हिन्दू मंदिर एवं परिसर है। वैसे इसका पुराना नाम यशोधपुर भी मिलता है। यह मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है। इसी तरह इंडोनेशिया में भी लगभग नौवीं शताब्दी का प्रम्बानन मंदिर है। इस मंदिर में त्रिदेव (भगवान शिव, भगवान विष्णु और भगवान ब्रह्मा) की पूजा की जाती है। यह मंदिर विश्व धरोहर में शामिल है। इसी क्रम में कटास राज मंदिर, पाकिस्तान में स्थित एक प्राचीन शिव मंदिर है। मान्यतानुसार यह मंदिर महाभारत काल से यहां पर है। वहीं पड़ोसी देश नेपाल का पशुपतिनाथ मंदिर भी विश्व के सबसे प्राचीन हिन्दू मंदिरों में से एक है। यह मंदिर यूनेस्को की विश्व धरोहर की सूची में शामिल है।

इसी तरह श्रीलंका, मॉरिशस, मलेशिया, ओमान, बहरीन, यूके, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और कनाडा समेत कई अन्य देशों में विशाल हिन्दू मंदिर हैं। इनमें से कई मंदिर तो हजारों वर्ष पुराने हैं। इससे स्पष्ट है कि सनातन संस्कृति के उच्च आदर्शों और मूल्यों के कारण इसका विस्तार भारतीय उपमहाद्वीप के बाहर भी था। ऐसा इसलिए था और आज भी है, क्योंकि जब भी जीवन दर्शन और अध्यात्म की बात होती है, तो सभी सनातन की ओर उम्मीद भरी नजरों से देखते हैं क्योंकि सनातन कालातीत है, यानी अनंत है। जब शारीरिक और मानसिक समस्याओं के निदान में अर्थशास्त्र, चिकित्सा शास्त्र और विज्ञान असमर्थ हो जाते हैं, तो वैज्ञानिक कसौटी पर स्वयं सिद्ध सनातन धर्म इस पर खरा उतरता है। सृष्टि का सबसे पुराना और जीवंत धर्म सनातन आज से नहीं, बल्कि अनंतकाल से 'वसुधैव कुटुंबकम्' और 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया' का पोषक रहा है। चाहे व्यक्तिगत जीवन हो या समाज जीवन या राष्ट्र प्रत्येक संदर्भ में खुशी, समृद्धि और शांति का जो दर्शन यहां है वह उत्तरी, दक्षिणी और पश्चिमी किसी भी मॉडल में दूर दूर तक नहीं है। साथ ही हिंदू धर्म अनादिकाल से मानवता के आर्थिक, सामाजिक और आध्यात्मिक कल्याण के साथ-साथ संपोषणीय पर्यावरण का भी पक्षधर रहा है।

डॉ. अरुण प्रकाश
विचारक एवं लेखक

इतिहास लेखन की विसंगतियां और भारतीय दृष्टि

लोक साहित्य के माध्यम से अतीत के प्रतिमानों का वर्तमान में उपादेयता बनाए रखने की लंबी परंपरा रही है। लोक साहित्य में इतिहास भौगोलिक रूप से अधिक व्यापक और सम्यक है। मनुष्य लोक से ही शिक्षित होता है। लोक साहित्य इतिहास की घटनाओं को ही नहीं, उसके शोधों, सन्धानों और प्राप्तियों को भी सामयिक पर्यायों से जोड़कर हमें उपलब्ध कराता आया है। इतिहास लेखन की सबसे बड़ी विसंगति लोक साहित्य को नकारने की है। मात्र भौतिक प्रतिमानों व भवनों के भग्न अवशेषों के आधार पर लिखा जाने वाला इतिहास सम्यक कैसे हो सकता है?

अतीत स्थायी आयाम है। वर्तमान की गतिशीलता और भविष्य के अनजान क्षितिज से इतर यहां सब अपरिवर्तनीय है, किंतु उसे देखने की हमारी क्षमता समुचित और सम्यक नहीं है। यही कारण है कि उसे कहने व बताने में भेद बना रहता है। इतिहास लेखन पूर्व में दर्ज की गई सूचनाओं की पुनर्व्याख्या तक सीमित नहीं हो सकता, अलबत्ता उसे कहने के लिए समय की गति को समझना बेहद आवश्यक है। काल की गति संरेखीय नहीं चक्रीय है। मनुष्य जिस दुनियावी समृद्धि की ओर सतत अग्रसर है, सभ्यता के क्रम में वह ऐसी ही समृद्धि के सर्वोच्चता से उसी क्रम में बीत भी हो रहा होता है। बीती समृद्धि की निकटता व उसके दोहराये जाने की आश्वस्ति उसकी स्मृति को बनाये रखती है। यही लोक साहित्य का आधार है। यही कारण है कि इतिहास और लोक साहित्य का अविनाभाव संबंध है। यह संबंध मंत्र और मूर्ति का है। लोक साहित्य की सामयिकता व अंतस में उसकी स्वीकार्यता से हिस्ट्री की प्रविधि उसे संदेह से देखती है, लेकिन, इतिहास की मूल संकल्पना, ''ऐसा ही हुआ'' का समर्थन यहीं से मिलता है। आभ्यंतर के अभ्यास इससे अपना सहकार देखते हैं। यह एकदम ताजी बात दिखती है। पानी की प्राचीनता को जानते हुये भी हम ओस की ताजगी को बखानते हैं। उसकी पारदर्शिता को प्रशंसित करते हैं। लेकिन, ओस की ताजगी पानी की प्राचीनता को, चुनौती नहीं हो सकती, यह हमारे लोक साहित्य ने जीया है। हम लोक साहित्य के माध्यम से ही भविष्य के संकल्पों को अतीत के प्रतिमानों से प्रमाणित करते हैं। क्योंकि, हमने यह देखा है कि पुष्प का अतीत और भविष्य दोनों बीज है। भारतीय समाज जीवन की पूर्णता उसी पिंड से करता है, जो उसका आरंभ था। इतिहास ने लोक साहित्य को

प्रतिमान दिए हैं, तो लोक साहित्य ने इतिहास को देखने की दृष्टि। लोक साहित्य ने ही हमें यह दृष्टि दी है कि इतिहास मुर्दों की कहानी नहीं, बीते की बयानी नहीं, जीवन की अनादिता और उसकी चक्रीय गति की ही घोषणा है। वहीं, जब हम काल की गति को संरेखीय मानकर अतीत की पड़ताल करते हैं तो सामान्यतः हम अपने आग्रहों को ही रिवर्स मैकेनिज्म में चलाते हैं। वर्तमान को कसौटी को मानकर क्रमशः हास से अतीत परखने का प्रयास करते हैं। शायद इसीलिए, हिस्ट्री की सूचनाएं बहुधा हमें चौंकाती हैं। स्तब्ध करती हैं। हमारी कसौटी पर खरी होने के बावजूद वह अविश्वसनीय लगती हैं। एक स्वाभाविक द्वंद्व बना रहता है।

दुनिया में हिस्ट्री को दोहराने और उसे सीखने की चर्चा होती है, लेकिन भारतीय समाज अतीत को भी आभ्यंतर में हमेशा रखता है। वह उसे सामयिक संशोधनों के साथ ऐसे दोहराता है जो उसकी स्वीकार्यता बदलते युग के साथ बनी रहे। कई बार अतीत के यथार्थ वर्तमान से इस कदर सायुज्य रच लेते हैं कि वह अतीत की बात लगते ही नहीं और वर्तमान चित्र की पूर्ववर्ती कल्पना लगने लगते हैं। इसीलिए बहुधा भारतीय इतिहास और मिथक एक दूसरे पर भेद रहित आरोपित हो जाते हैं। लेकिन यह समस्या उस दृष्टिकोण की हो सकती है जो इस प्रविधि से परिचित नहीं और इसका स्पर्श उन्हें प्राप्त नहीं। जो इस प्रविध से परिचित हैं, वे तो जानते हैं कि भारतीय समाज बीते को कैसे बटोर कर चलता है और उसे हर दिन नयापन देता जाता है। यहां एक बात ध्यान देने की है कि वह अतीत में घटी घटनाओं के सत्य में कोई

दुनिया में हिस्ट्री को दोहराने और उसे सीखने की चर्चा होती है, लेकिन भारतीय समाज अतीत को भी आभ्यंतर में हमेशा रखता है। वह उसे सामयिक संशोधनों के साथ ऐसे दोहराता है जो उसकी स्वीकार्यता बदलते युग के साथ बनी रहे। कई बार अतीत के यथार्थ वर्तमान से इस कदर सायुज्य रच लेते हैं कि वह अतीत की बात लगते ही नहीं और वर्तमान चित्र की पूर्ववर्ती कल्पना लगने लगते हैं। इसीलिए बहुधा भारतीय इतिहास और मिथक एक दूसरे पर भेद रहित आरोपित हो जाते हैं।

परिवर्तन नहीं करता, लेकिन उनके पर्याय व प्रतिमान को बदलता रहता है। महात्मा गांधी ने रामायण को आत्मा का इतिहास इसी क्रम में कहा। रामायण इतिहास तो है, लेकिन वर्तमान की विसंगतियों व विभ्रम का वह जैसा समाधान प्रस्तुत करता है, उससे युग का भेद पता नहीं चलता। हालांकि, यहां एक मौलिक चूक विद्वानों से होती रही है। वह यह कि हम अपनी चुनौतियों की प्राचीनता न खोजने के बजाय, इससे समाधान की अर्वाचीनता सिद्ध करने लग जाते हैं।

लोक साहित्य के माध्यम से अतीत के प्रतिमानों का वर्तमान में उपादेयता बनाए रखने की लंबी परंपरा रही। लोक साहित्य में इतिहास भौगोलिक रूप से अधिक व्यापक और सम्यक है। मनुष्य लोक से ही शिक्षित होता है। लोक साहित्य इतिहास की घटनाओं को ही नहीं उसके शोधों, सन्धानों और प्राप्तियों को भी सामयिक पर्यायों से जोड़कर हमें उपलब्ध कराता आया है। इतिहास लेखन की सबसे बड़ी विसंगति लोक साहित्य को नकारने की है। मात्र भौतिक प्रतिमानों व भवनों के भग्न अवशेषों के आधार पर लिखा जाने वाला इतिहास सम्यक कैसे हो सकता है। इतिहास के चिन्ह भौगोलिकता और संस्कृति की छाप लिए होते हैं। ऐसे में इतिहास लेखन के लिये किसी एक पैटर्न व परिमाण को प्रशस्त नहीं माना जाता। भारत के इतिहास को देखने की भारतीय दृष्टि अधिक सजीव व सम्यक है, उसे ही इतिहास लेखन का आधार बनाया जाना चाहिए। ■

समान नागरिक संहिता की आवश्यकता

कृष्ण कुमार महेश्वरी
निदेशक, पब्लिक न्यूज, नई दिल्ली

कोई भी भूभाग, राष्ट्र तभी कहलाएगा जब न केवल प्रशासनिक तंत्र में एकजुटता हो, वरन् सांस्कृतिक मूल्य भी साझा हो। इसके लिए भावनात्मक एकता बहुत जरूरी है। भारतीय परिवेश में निरंतर गतिशील सनातनी रूपरेखा हिंदुत्व जीवन शैली से ओतप्रोत रही है। इसीलिए इस भूभाग को भारतीय उपमहाद्वीप भी कहा जाता है। यदि हम गौर करें, तो इस सांस्कृतिक परिवेश की विशालता समझ में आ जाएगी। यह सर्वविदित है कि भारत की वर्तमान आबादी का कुछ नहीं तो 95 फीसदी से भी अधिक के पूर्वज हिंदू थे। इसका मतलब यह हुआ की थोड़ी सी संख्या ईरान, यूनान आदि से आए विभिन्न पंथों के अनुयायियों की रही। साथ ही अथाह प्राकृतिक ऊर्जा खनिजों का भंडार, हिमालय की तलहटी में फैली उपजाऊ भूमि तथा एक बहुत बड़ी आबादी वाला बाजार पूर्वकाल की विदेशी शक्तियों के लिए बड़े लालच का कारण बना। तत्कालीन परिस्थिति में भारतवर्ष छोटे–छोटे अनेक रजवाड़ों में बंटा था और सामूहिक रूप से केंद्रित शक्ति के दखल से खलल चलता रहा। रजवाड़ों की यही आपसी फूट विदेशी आक्रांताओं को इस भूभाग में अपने पैर जमाने में सहायक सिद्ध हुई।

वहीं भाव प्रधान राष्ट्र में आध्यात्मिकता की ओर रुझान से लोग सहनशील थे। इस दशा में मुस्लिम आक्रांताओं ने शातिर दिमाग से साजिश रची और ईसाइयों ने पैसे और अच्छे जीवन का लालच देकर अपने दायरे का विस्तार किया। इस तरह डर और लालच से जो छद्म परिस्थिति से आम जन किंकर्तव्यविमूढ़ हो गए और फिर आर्थिक प्रलोभन से लोगों को अच्छे जीवन की ओर बढ़ना आसान लगा। इस तरह सोने की चिड़िया भारत कई सदियों से विदेशी आक्रांताओं के

समान नागरिक संहिता की दिशा में उत्तराखंड कदम बढ़ा चुका है। हालांकि संविधान बनाते समय संविधान सभा में व्यापक बहस के दौरान राष्ट्रहित में प्रबुद्ध वर्ग इसका प्रबल पक्षधर था।

आकर्षण का केंद्र बन गया। तब से चला कुचक्र कुछ कम ज्यादा आज भी जारी है। बस उन लोगों के रूप बदलते गए। जन भावनाओं के शोषण के लिए मजहबी पंथों पर आक्रांताओं ने अर्थ का अनर्थ करने वाला मुलम्मा चढ़ाया। इस तरह इस्लाम और ईसाइयत विस्तार के क्रम में राष्ट्र में सबके अलग–अलग कानून हो गए। इसके अलावा हिंदुस्तान के विभाजन की विभीषिका और वोट बैंक की राजनीति ने ऐसे बीज बोए, जिनकी फसल काटकर शातिर लोगों ने वर्षों राज किया। इस शातिराना हरकत को लगाम देने का आधार है एक देश एक कानून। ऐसा कानून जो सभी पर बिना किसी भेदभाव के लागू हो। पर अफसोस की बात तो यह है कि राजनीतिक स्वतंत्रता हासिल होने के बावजूद कुछ तत्वों में फूट डालो और राज करो की मंशा से देश हित वाले कानून और विचार आजादी के इतने दिनों बाद भी नेपथ्य में रहे। लेकिन अब समय आ गया है कि गुलामी की मानसिकता से बाहर आकर स्व के तत्वों को आत्मसात करना होगा। इसके लिए कुछ बिंदुओं पर अमल जरूरी है। जैसे –

– भले ही पूजा पद्धति कैसी भी हो राष्ट्र प्रथम की अवधारणा को स्वीकारें।

– पूजा पद्धति के प्रतीक जैसे हैं, वैसा रहने दें। उसकी जड़ में जाकर अपनी आस्था से दूसरों को आहत न करें।

– जनतांत्रिक व्यवस्था में एक देश एक कानून पर अमल हो।

जब एक कानून व्यवस्था देश के नागरिकों पर समान रूप से लागू होगी, तो राष्ट्रीय एकता का भाव स्वीकारना भी सहज हो जाएगा। दुनिया के अनेक देशों में ऐसा चलन है कि उससे अलग व्यवस्था मांगने वालों के लिए बाहर का रास्ता है। किसी भी वर्ग की आस्था, मान्यताएं व्यक्तिगत होती हैं, इसका राष्ट्र के कानून पर प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए। इसलिए देशहित में समान नागरिक संहिता का होना कल्याणकारी है। ■

सांस्कृतिक पुनरुत्थान से राष्ट्र जागरण

डॉ. मनमोहन सिंह शिशौदिया
शिक्षक, भौतिकी विज्ञान विभाग
गौतमबुद्ध विवि, ग्रेटर नोएडा

प्राचीन एवं गौरवशाली भारतीय संस्कृति को भी नष्ट-भ्रष्ट करने के प्रयास हजारों साल पहले आरंभ हुए जब न केवल सैनिक आक्रमण, अपितु सांस्कृतिक आक्रमण को भी भारत के खिलाफ हथियार बनाया गया। भारत ने हजारों साल तक मजहबी आक्रमणकारियों तथा उपनिवेशवादियों के दंश को सहा। आज भी ऐसे अनेक किले, मजार, मस्जिद, दरगाह आदि संरचनाएं मौजूद हैं, जहां यह स्पष्ट है कि या तो वे मंदिर के स्थान पर बने हैं या मंदिरों की सामग्री के प्रयोग से।

समाज के सोचने, कार्य करने, निर्णय लेने, एवं आगे बढ़ने के प्राकृतिक मार्गदर्शक सिद्धांतों की अभिव्यक्ति ही संस्कृति है। यह साहित्य, वास्तुकला, शिल्पकला, दर्शनशास्त्र, धर्म, अध्यात्म, विज्ञान जैसे क्षेत्रों में समाज की मानसिक प्रगति का द्योतक है। यह संस्कृति ही भारत की आत्मा है। इसका मूल है अध्यात्म और इस सांस्कृतिक चेतना के स्रोत हैं वेद, उपनिषद, रामायण, श्रीमद्भगवद्गीता आदि। भारतीय संस्कृति के मूल विचार हैं, 'वसुधैव कुटुंबकम (उपनिषद)', 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे संतु निरामया (पुराण)', 'एकम सत विप्रा बहुधा वदन्ति (ऋग्वेद)', 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन (गीता)', 'नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः (गीता)', 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः (मनुस्मृति)' आदि। चूंकि राष्ट्र की संस्कृति उसके लोगों के मन और आत्मा में बसती है, अतः किसी राष्ट्र को नष्ट करने का स्थायी तरीका है उसकी संस्कृति का समूल विनाश। अतः सद्भावना एवं विश्व-कल्याण के लिए समर्पित एवं गौरवशाली भारतीय संस्कृति को भी नष्ट-भ्रष्ट करने के प्रयास हजारों साल पहले आरंभ हुए जब न केवल सैनिक आक्रमण, अपितु सांस्कृतिक आक्रमण को भी भारत के खिलाफ हथियार बनाया गया। भारतीय समाज ने हजारों साल तक मजहबी तथा उपनिवेशवादी आक्रमणकारियों से लगातार संघर्ष जारी रखा। विदेशी आक्रान्ताओं ने न केवल भारत के आर्थिक संसाधनों को लूटा, उन्होंने भारत के सामाजिक एवं सांस्कृतिक ताने-बाने और समृद्ध विरासत को भी मटियामेट करने का सोचा-समझा प्रयास किया। भारतीय समाज में हीन भावना जागृत करने के उद्देश्य से उन्होंने समाज के सांस्कृतिक मान बिंदुओं को खंडित किया। संस्कृति में वो बीज होते हैं, जो किसी राष्ट्र को अनगिनित पराजयों तथा विषमताओं के बाद भी पुनः खड़ा होने का संबल देते हैं तथा वहां जनमानस को सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा हेतु सतत संघर्ष के लिए प्रेरित करते हैं। यह जानते हुए कि भारत के मठ, मंदिर एवं तीर्थस्थल न केवल पूजा के स्थान हैं, अपितु शिक्षा, कला, नृत्य, संगीत अर्थात् के सांस्कृतिक केंद्र भी हैं, इस्लामी आक्रान्ताओं ने इन्हें निशाना बनाया। आज ऐसे अनेक किले, मजार, मस्जिद, दरगाह आदि संरचनाएं मौजूद हैं, जहां यह स्पष्ट है कि या तो वे मंदिर के स्थान पर बने हैं या मंदिरों की सामग्री के प्रयोग से। सीताराम गोयल द्वारा संपादित पुस्तक, 'Hindu Temples: What Happened to Them' में 1800 से ज्यादा ऐसी

इस्लामिक सरंचनाओं की सूची दी गई है जिनका निर्माण या तो हिन्दू मंदिरों के ऊपर किया गया या उनके विध्वंस से प्राप्त सामग्री के प्रयोग से। पुस्तक में कुतुबमीनार, बाबरी मस्जिद, ज्ञानवापी एवं पिंजौर गार्डन आदि भी शामिल हैं। पुस्तक में शामिल 299 संरचनाएं अकेले उत्तर प्रदेश में हैं। संपादक के अनुसार यह सूची अपूर्ण है और वास्तविक संख्या इससे कहीं ज्यादा है! ब्रिटिश उपनिवेशवादियों ने भारत पर अपना वर्चस्व बनाए रखने के लिए भारत की श्रेष्ठ सांस्कृतिक विरासत को छिन्न-भिन्न करके लोगों को पाश्चात्य संस्कृति के ढांचे में ढालने के प्रयास किये। लॉर्ड मैकाले ने भारत में ऐसी शिक्षा पद्धति लागू की जिससे भारतीय अपनी सांस्कृतिक जड़ों से कट जाएं और आधारभूत सांस्कृतिक मूल्यों को विस्मृत कर पाश्चात्य संस्कृति के बहाव में बह जाएं जिससे वे निरंकुश शासन करते रहें। लंबे संघर्ष और अनगिनित बलिदानों के बाद 1947 में हमें राजनीतिक स्वतंत्रता तो मिली, परंतु वह भी विभाजन की विभीषिका झेलकर और बिना सांस्कृतिक स्वतंत्रता के। देश के सांस्कृतिक मान-बिन्दु जैसे मठ, मंदिर, तीर्थस्थल, कला, शिक्षा, भाषा, विज्ञान आदि सब उपेक्षित ही रहे। अनेक हमलों से तोड़े गए सोमनाथ मंदिर के पुनरुद्धार से शुरू हुई प्रक्रिया वहीं समाप्त हो गई। साथ ही भारत में ऐसा परिस्थितकी तंत्र विकसित हुआ जो भारत के लोगों को उसके सांस्कृतिक मान बिंदुओं एवं विरासत से काटकर रखने का षडयन्त्र करने लगा। उन्होंने यह स्थापित करने की कोशिश की, कि जो भारत का है वो तुच्छ, हीन एवं व्यर्थ है। चाहे वो यहां का इतिहास, भाषा, साहित्य, चिकित्सा पद्धति, विज्ञान, कला, न्याय व्यवस्था, अर्थशास्त्र आदि कुछ भी क्यों न हो। उनके षड़यंत्रकारी यह स्थापित करने में लग गए कि भारत का इतिहास हार का है, हीनता का है, गरीबी का है, भुखमरी का है, कायरता का है, सांप और सपेरों का है! अर्थात् जो भी अच्छा है वो भारत का नहीं हो सकता। हार, हीनता, दुर्बलता और कायरता पर आधारित इतिहास से क्या कोई पीढ़ी प्रेरित हो सकती है?

स्थति यहां तक पहुंच गई जब भारत सरकार द्वारा भारतीयों के रोम-रोम में बसे मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्रीराम के अस्तित्व को भी नकारा जाने लगा। परंतु कहते हैं हर अंधेरी रात के बाद एक सुबह होती है। इस सुबह के साथ आरंभ हुआ है भारत का सांस्कृतिक पुनरुत्थान। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि वर्तमान समय भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण का है। सांस्कृतिक पुनर्जागरण से ही देश के आर्थिक एवं राजनैतिक महाशक्ति बनने का रास्ता प्रशस्त होगा। प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी की पहल पर संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस घोषित किया। इससे दुनिया में योग की पुनर्स्थापना हुई है जिसके प्रत्यक्ष लाभ दुनिया को मिल रहे हैं। श्रीराम भारतीय संस्कृति के मेरुदंड हैं। परंतु उनके जन्मस्थान पर बने मंदिर को विदेशी आक्रान्ताओं ने ध्वस्त कर दिया। जन्मभूमि पर

हर अंधेरी रात के बाद एक सुबह होती है। इस सुबह के साथ आरंभ हुआ है भारत का सांस्कृतिक पुनरुत्थान। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि वर्तमान समय भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण का है। सांस्कृतिक पुनर्जागरण से ही देश के आर्थिक एवं राजनैतिक महाशक्ति बनने का रास्ता प्रशस्त होगा।

अयोध्या में इस आशा और विश्वास के साथ पहले ही भव्य दीपोत्सव का आयोजन होने लगा कि अयोध्या में श्रीराम की जन्मस्थली पर भव्य राम मंदिर का निर्माण जल्द होगा। माननीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय एवं भारतीयों की भावनाओं के अनुरूप अयोध्या में भव्य मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा से भारतीय समाज उत्साहित है। उज्जैन में 'महाकाल लोक' का निर्माण, वाराणसी मे काशी-विश्वनाथ गलियारे का निर्माण, चारधाम परियोजना का आरंभ, केदारनाथ धाम का जीर्णोद्धार एवं जम्मू-कश्मीर में मन्दिरों का जीर्णोद्धार सरकार एवं समाज की गंभीरता प्रदर्शित करता है। भारत सरकार द्वारा विदेशों से भी सांस्कृतिक धरोहर को वापिस लाने के प्रयास किये जा रहे हैं। देश की संस्कृति को धूल धूसरित करने वालों के नाम पर सड़कों, शहरों, एवं प्रमुख स्थानों के नाम होंगे, तो वहां की पीढ़ियां उन्हें नायक के रूप में ही जानेंगी। आखिर आक्रान्ताओं, लुटेरों, अत्याचारियों और व्यभिचारियों का महिमामंडन और कब तक? हालांकि इलाहाबाद का नाम प्रयागराज, फैजाबाद का नाम अयोध्या, मुगलसराय जंक्शन का नाम दीनदयाल उपाध्याय रेलवे स्टेशन, गुड़गांव का नाम गुरुग्राम, राष्ट्रपति भवन स्थित मुगल गार्डन का नाम अमृत उद्यान करके आक्रान्ताओं को महिमामंडित न करने एवं उपनिवेशवाद के चिन्ह मिटाने का कार्य प्रारंभ अवश्य हुआ है। परंतु राष्ट्रनायकों को स्थापित करने के लिए खलनायकों को इतिहास में दफन करने के कार्य को सरकार तथा समाज न केवल भारत में, अपितु विदेशों में भी भारतीय संस्कृति के सरंक्षण के प्रयास किये जा रहे हैं। जैसे आज भारत कंबोडिया स्थित दुनिया के सबसे बड़े एवं सूर्यवर्मन द्वितीय के शासनकाल (1112–53) में निर्मित अंकोरवाट मंदिर का जीर्णोद्धार एवं संरक्षण करा रहा है। इसमें भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग सहयोग कर रहा है। हाल ही में भारत सरकार के प्रयासों से श्रीलंका स्थित थिरूकेतीश्वरम मन्दिर का भी जीर्णोद्धार हुआ है और 12 वर्षों तक बंद रहने के बाद अब यह मन्दिर श्रद्धालुओं के लिए खोल दिया गया है। बहरीन के मनामा स्थित 200 वर्ष पुराने श्रीनाथजी मन्दिर का भी भारत जीर्णोद्धार करा रहा है। संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में एक भव्य और दिव्य मन्दिर का शुभारंभ 4 अक्तूबर, 2022 को हुआ। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 14 फरवरी 2024 को अबू धाबी में 27 एकड़ में फैले और राजस्थान के गुलाबी बलुआ पत्थर से निर्मित पहले मंदिर का भी उद्घाटन किया। देश ने नये संसद भवन का निर्माण भी कराया है जिसमें भारतीय संस्कृति को उकेरा गया है। हजारों वर्षों की नींद के बाद आज भारत जग रहा है और सूर्य की किरणों की प्रतीक्षा कर रहा है। आशा है भारत के सांस्कृतिक पुनरुत्थान की यह यात्रा तब तक जारी रहेगी, जब तक भारत के गौरवशाली अतीत की ही भांति इसका वर्तमान भी गौरवशाली होगा। भारत विकसित एवं महाशक्ति बनने के साथ ही अपनी संस्कृति को संरक्षित रखते हुए विश्व कल्याण के लक्ष्य के साथ दुनिया का नेतृत्व करेगा। ■

मीडिया की राष्ट्र जागरण में भूमिका

दशकों पहले भारत में मुख्यधारा की पत्रकारिता धर्म आधारित रिपोर्टिंग के सामाजिक सरोकारों से लगभग दूर ही रही है। और संवैधानिक पदों पर बैठे नेता मंदिरों में जाने, पूजा-पाठ के सार्वजनिक प्रदर्शन से बचते रहे हैं, लेकिन अब नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद से धर्म के क्षेत्र से जुड़ी खबरों में बड़ा सकारात्मक बदलाव आया है। इसी का परिणाम है कि अयोध्या में राम मंदिर और अबू धाबी में बने स्वामीनारायण मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा को भारतीय मीडिया ही नहीं, बल्कि अंग्रेजी समेत दुनियाभर के अन्य मीडिया ने भी लाइव प्रसारण किया।

प्रमोद भार्गव
साहित्यकार एवं वरिष्ठ पत्रकार

भारत में मुख्यधारा की पत्रकारिता धर्म आधारित पत्रकारिता के सामाजिक सरोकारों से लगभग दूर ही रही है। हमारे संवैधानिक पदों पर बैठे नेता मंदिरों में जाने, पूजा-पाठ के सार्वजनिक प्रदर्शन से बचते रहे हैं। हालांकि अनेक सत्ताधारी दलों के नेता तांत्रिक पीठों के दर्शन करने और तांत्रिक अनुष्ठान कराते रहे हैं। प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी दतिया की पीतांबरा पीठ जाती रहीं, तो वहीं पीवी नरसिंह राव द्वारा अपने आध्यात्मिक एवं तांत्रिक गुरु चंद्रास्वामी से तांत्रिक अनुष्ठान कराने की खबरें खूब सुर्खियों में रही हैं। वामपंथी वैचारिकता से जुड़ा मीडिया इसे अंधविश्वास फैलाने का कारण मानता रहा है, लेकिन यही मीडिया मस्जिदों और चर्चों से जुड़े अंधविश्वास को खबर बनाने से बचता रहा है। वहीं अब नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद से धर्म के क्षेत्र से जुड़ी खबरों में बड़ा सकारात्मक बदलाव आया है। राम मंदिर, कृष्ण जन्मभूमि, वाराणसी की ज्ञानवापी और धार की भोजशाला के मामलों में अब यही मीडिया तर्क सम्मत इतिहास सामने ला रहा है। पुरातत्व विभाग द्वारा किए सर्वेक्षणों को मान्यता मिल रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मंदिरों का कायाकल्प कर उन्हें दर्शनार्थियों के लिए सुविधाजनक बना रहे हैं। अब मोदी केदारनाथ मंदिर के निकट गुफा में तपस्या करते हैं, राम मंदिर और यूएई के अबू धाबी में बने स्वामीनारायण मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा करते हैं, तो भारत का मीडिया ही नहीं, अंग्रेजी समेत दुनिया का अन्य बहुभाषी मीडिया इसका लाइव प्रसारण करते हैं। घंटों खबर चलाते हैं। मंदिरों का इतिहास खंगालते हुए वैज्ञानिक और आध्यात्मिक महत्व का आदरपूर्वक बखान करते हैं। इन खबरों की महिमा की देश की युवा पीढ़ी इतिहास पुरुषों के कार्य और व्यक्तित्व को जान रही और धार्मिक यात्राओं पर निकल रही है। मीडिया की ही देन है कि अयोध्या में रामलला के दर्शन को लाखों लोग रोजाना पहुंच रहे हैं। इसी का प्रभाव है कि इरफान हबीब जैसे इतिहासकारों को भी कहना पड़ा है कि सैकड़ों मंदिर तोड़कर, उन्हीं के अवशेषों से मस्जिदें बनाई गई हैं। इस सत्य को ये कथित वामपंथी इतिहासकार पहले ही उद्घाटित कर देते, तो हिंदू और मुसलमानों के बीच कटुता का भाव पनपता ही नहीं।

आज जो काम मीडिया कर रहा है, वही काम पांच सौ साल पहले जब अयोध्या में इस्लामी आक्रांता राम मंदिर ध्वस्त कर रहे थे, तब बाबा तुलसी और सूरदास क्रमशः राम एवं कृष्ण की लीलाओं का चरित्र हिंदी की सहायक भाषाओं अवधि, बृज और भोजपुरी में रच रहे थे। जिससे हमलावरों के हमलों से आहत जनमानस जागरूक हो और अपनी सनातन सांस्कृतिक अस्मिता तथा देश की संप्रभुता के लिए बलिदानी भाव-बोध से जूझ जाए। निहत्था भक्त इसी थाती के बलबूते इस्लाम की तलवार और फिरंगियों की तोपों से पूरे पांच सौ साल युद्धरत रहा। संघर्षरत इन्हीं आम भारतीयों ने हमें 15 अगस्त 1947 को आजादी दिलाई। तत्पश्चात वामपंथी वैचारिकी कुछ इस तरह गढ़ी जाती रही कि हम अपनी ऐतिहासिक सांस्कृतिक विरासत पर प्रश्न चिन्ह उठाने लग गए? मनमोहन सिंह सरकार ने राम और रामसेतु के अस्तित्व को ही झुठलाने का काम कर दिया था। अयोध्या में भगवान राम के जन्म स्थल पर तो रामलला के विग्रह की स्थापना और इस्लामिक देश संयुक्त अरब अमीरात की राजधानी अबू धाबी में राम मंदिर जैसा ही भव्य मंदिरों के पट खुलने के साथ ही सनातन धर्म से जुड़े मंदिरों का आध्यात्मिक,धार्मिक और पर्यटन से जुड़ी महिमा विश्वव्यापी हो गई।

अयोध्या में बढ़ते तीर्थ यात्री : प्रतिदिन लाखों तीर्थयात्री अयोध्या नगरी में पहुंच रहे हैं। इस आंकड़े में ऐतिहासिक बढ़ोतरी हुई है। यात्रियों की संख्या साल दर साल बढ़ती जा रही है। आने वाले समय में यहां प्रतिवर्ष दस करोड़ से अधिक पर्यटकों के आने की उम्मीद है। एक पर्यटक औसतन हजारों रुपये से अधिक खर्च करता है, अर्थात् अयोध्या ही नहीं समूचे प्रदेश की अर्थव्यवस्था को पर्यटन से बल मिला है। इसी तर्ज पर सोमनाथ, वाराणसी, उज्जैन और केदारनाथ के मंदिरों में गलियारों का विस्तार हो गया है। इन तीर्थों के आधुनिक एवं सुविधाजनक हो जाने से पर्यटन का आकार बढ़ गया है। विश्वस्तरीय होटल, सड़क, हवाई और रेल सुविधाओं में उन्नयन से यात्रियों की संख्या उम्मीद से कहीं ज्यादा बढ़ी है। फिलहाल भारत की जीडीपी में पर्यटन और यात्रा का योगदान 5 से 6 प्रतिशत है। इसमें धार्मिक पर्यटन का हिस्सा अब तक आधा रहता था, जो निरंतर उछाल मार रहा है। मीडिया ने जो राममय

राम मंदिर, अयोध्या

स्वामीनारायण अक्षरधाम मंदिर, अमेरिका

सकारात्मक वातावरण रचा है, उसी का परिणाम है कि देश में धार्मिक पर्यटन लगातार बढ़ रहा है।

मंदिरों का चतुर्दिक विकास : उत्तर प्रदेश में धार्मिक पर्यटन में बढ़ोतरी से आकर्षित व प्रेरित होकर अन्य राज्य सरकारें भी धार्मिक स्थलों के संरचनात्मक विकास, व आवागमन की सुविधाओं को बढ़ावा देने में लग गई हैं। असम के गुवाहाटी में कामाख्या मंदिर का 500 करोड़ रुपये की लागत से विकास शुरू हो गया है। इस मंदिर के परिसर का क्षेत्र तीन हजार वर्गफीट से बढ़ाकर 10 हजार वर्गफीट किया जा रहा है। राजस्थान में गोविंद देव मंदिर, पुष्कर तीर्थ और बेणेश्वर धाम का विकास सौ-सौ करोड़ रुपये की लागत से किया जा रहा है। बिहार सरकार भारतमाला धार्मिक संपर्क योजना के अंतर्गत उच्चैठ भगवती मंदिर से महिषी स्थित तारापीठ को जोड़ने के लिए मधुबनी के उमगांव से सहरसा तक के मार्ग को विस्तृत कर रही है। महाराष्ट्र सरकार कोल्हापुर में 250 करोड़ की लागत से महालक्ष्मी मंदिर गलियारा बना रही है। इसी प्रकार प्रसिद्ध तीर्थस्थल नासिक से त्रयम्बकेश्वर मंदिर तक चौड़ा रास्ता बनाया जा रहा है। तेलंगाना में 1300 करोड़ की लागत से ययादि मंदिर का निर्माण किया गया है। दशावतारों में से भगवान नृसिंह के इस मंदिर के गर्भगृह में 125 किलो सोना लगा है। मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा में 314 करोड़ रुपये से एक सौ एकड़ में लेटे हनुमान मंदिर-लोक और सलकनपुर श्रीदेवी महालोक बनाया जा रहा है। सागर में रविदास मंदिर धाम, दतिया में पीतांबरा माईलोक ओरछा में रामराजा लोक, चित्रकूट में रामपथगमन लोक, ग्वालियर में शनिलोक और बड़वानी में नाग-लोक बनाया जाना प्रस्तावित हैं। उत्तर प्रदेश के मथुरा में मथुरा-वृंदावन गलियारा और यमुना नदी फ्रंट का विकास 250 करोड़ रुपये की लागत से किया जा रहा है।

गुजरात सरकार श्रीमद् भागवत कथा और महाभारत में वर्णित द्वारका दर्शन के लिए अरब सागर में यात्री पनडुब्बी चलाने का अनूठा कार्य करने जा रही है। इसके लिए गुजरात सरकार ने मझगांव डॉक शिपयार्ड के साथ एमओयू साइन किया है।

समुद्र में कृष्ण की द्वारका : हजारों साल पहले समुद्र में डूब चुकी भगवान कृष्ण की द्वारका के दर्शन पनडुब्बी से कराये जाने की तैयारी हो रही है। गुजरात सरकार श्रीमद् भागवत कथा और महाभारत में वर्णित द्वारका दर्शन के लिए अरब सागर में यात्री पनडुब्बी चलाने का अनूठा कार्य करने जा रही है। इसके लिए गुजरात सरकार ने मझगांव डॉक शिपयार्ड के साथ एमओयू साइन किया है।

अमेरिका भी मंदिरमय : भारत ही नहीं, अमेरिका में भी भारतवंशियों के लिए स्वर्णिम भक्ति-युग चल रहा है। 2016 में यहां 250 मंदिर थे, जो अब बढ़कर 750 हो गए हैं। अर्थात अमेरिका के प्रत्येक राज्य में लगभग 12 मंदिर हैं। सर्वाधिक कैलिफोर्निया में 120, न्यूयॉर्क में 100, फ्लोरिडा में 60 और जॉर्जिया में 30 मंदिर हैं। भारत के बाहर न्यूजर्सी में सबसे बड़ा हिंदू मंदिर 800 करोड़ रुपये की लागत से बना है। अक्षरधाम नामक इस मंदिर का परिसर 183 एकड़ में विस्तृत है। स्वामीनारायण संस्था ने इस मंदिर का निर्माण किया है। 12 वर्षों में निर्मित हुए इस मंदिर में 10 हजार मूर्तियां, दीवारों और खंभों पर उत्कीर्ण हैं। दीवारों पर वाद्ययंत्र भी उकेरे गए हैं। इस मंदिर के निर्माण हेतु सामग्री भारत, ग्रीस, बुल्गारिया, इटली और तुर्किये से लाई गई है। ऐसा ही एक शिव-विष्णु जी का मंदिर मैरीलैंड में बना है। न्यूजर्सी का मंदिर कंबोडिया के अंकोरवाट के बाद क्षेत्रफल में दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा हिंदू मंदिर है। यह मंदिर बारहवीं सदी में बना था, जो आज भी अपने मूल स्वरूप में सुरक्षित है।

एआई से मंदिरों के इतिहास की जानकारी : भारत के अब प्रमुख मंदिरों की जानकारी हासिल करने के लिए एआई यानी कृत्रिम बुद्धिमता से जोड़ दिया गया है। यह शुरुआत कोरोना के कालखंड में हुई थी, जो अब एक बड़ा आयाम बन चुका है। जब घरों से निकलना प्रतिबंधित था, तब अनेक मोबाइल एप्लिकेशन पर घर बैठे प्रसिद्ध मंदिरों में दर्शन, पूजा और प्रसाद वितरण का सिलसिला आरंभ हुआ था। यह अब एक पूरा पैकेज बन गया है।

धार्मिक पर्यटन की आर्थिकी : अयोध्या में भागवान राम की प्राण-प्रतिष्ठा के साथ ही देश का धार्मिक पर्यटन एक लाख करोड़ की अर्थव्यवस्था से ऊपर जाने की उम्मीद अर्थशास्त्री जता रहे हैं। भक्ति से जुड़ा यह व्यापार 10 से 15 प्रतिशत की वार्षिक दर से बढ़ रहा है। यहां तक की कई राज्यों में प्रमुख मंदिरों की आर्थिकी उस राज्य के कुल वार्षिक बजट से भी कहीं अधिक है। अतः मर्यादा पुरुषोत्तम राम और कृष्ण की महिमा, नैतिकता के प्रतिमान और मानवता के चरम आदर्श व उत्कर्ष से जुड़ी तो है ही, अब बड़ी आर्थिकी का आधार भी बन गई है। गोया यह धार्मिक पर्यटन का भक्तिकाल तो है ही, देश की अर्थव्यवस्था को नूतन व निरंतर बनाए रखने का भी बड़ा आयाम बनता दिखाई दे रहा है। यह सब मीडिया की उल्लेखनीय भूमिका के बिना कतई संभव नहीं था। ■

सांस्कृतिक पुनर्जागरण और युवा शक्ति

प्रो. संजय द्विवेदी
पूर्व महानिदेशक,
भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली

भारत अध्यात्म, ज्ञान, कर्म, सेवा, साधना और करुणा का देश रहा है। इसलिए ऋषियों, शिक्षकों, कवियों, गुरुओं और वरिष्ठ-जनों ने युवा-शक्ति का यथेष्ट मार्गदर्शन करके उन्हें समाज, देश और दुनिया के कल्याण की ओर सदैव प्रेरित किया है।

सनातन संस्कृति का यह स्वर्णिम दौर चल रहा है और भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सनातन संस्कृति के महत्त्वपूर्ण विचारों "वसुधैव कुटुम्बकम्" अर्थात् पूरा विश्व एक परिवार है तथा "सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः" सभी प्रसन्न एवं सुखी रहें, के इन्हीं मूल मंत्रों के साथ सनातन संस्कृति के संवाहक के रूप में हम सभी के मार्गदर्शक बन रहे हैं और समस्त विश्व को सनातन के विचारों से अवगत करवा रहे हैं। एक आधुनिक राष्ट्र के रूप में हमारा इतिहास करीब साढ़े सात दशक पुराना है, लेकिन हमारी सभ्यता 5,000 वर्ष से भी अधिक प्राचीन है। भारत के खाते में अनगिनत उपलब्धियां हैं। उनके स्मरण के लिए इससे बेहतर और क्या अवसर हो सकता है कि जब हम अपनी आजादी के अमृत काल में हैं, तो केवल इस दिशा में ठोस और एकजुट प्रयास किए जाने की आवश्यकता है।

भारत अध्यात्म, ज्ञान, कर्म, सेवा, साधना और करुणा का देश रहा है। इस क्रम में, राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के लिए युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है इसलिए ऋषियों, शिक्षकों, कवियों, गुरुओं और वरिष्ठ–जनों ने युवा–शक्ति का यथेष्ट मार्गदर्शन करके उन्हें समाज, देश और दुनिया के कल्याण की ओर सदैव प्रेरित किया है। राष्ट्र–निर्माण के कार्य में युवाओं को प्रेरित करने में समाज की, मनीषियों और चिंतकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। ये मनीषी और चिंतक युवा शक्ति के लिए सदैव प्रेरक होते हैं। उनके 'रोल मॉडल' होते हैं। सामान्य तौर पर, ये रोल मॉडल समय–समय पर, देश–काल और परिस्थिति के अनुसार, बदलते रहते हैं, लेकिन कुछ रोल मॉडल कभी नहीं बदलते। ऐसे ही एक कालजयी रोल मॉडल हैं – स्वामी विवेकानंद। स्वामी विवेकानंद के विचार दुनियाभर के युवाओं को प्रेरित करते रहे हैं। उन्हें युवाओं की ऊर्जा पर बहुत भरोसा था। वे कहते थे कि युवा वो होता है जो बिना अतीत की चिंता किए अपने भविष्य के लक्ष्यों की दिशा में काम करता है। स्वामी विवेकानंद भारत के युवा को अपने गौरवशाली अतीत और वैभवशाली भविष्य की एक मजबूत कड़ी के रूप में देखते थे। युवा शक्ति को आज बस अपने अतीत को जानना है। क्योंकि अतीत को जानकर, उसे समझ कर, आपको भविष्य के लक्ष्य तय करने हैं। अपने लिए, समाज के लिए, देश के लिए जो कुछ भी उत्तम और कल्याणकारी है, उसे प्राप्त करने के लिए काम करना है।

आज का भारत, युवा शक्ति से भरपूर है। देश की लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या यानी करीब 85 करोड़ युवा अपनी रचनात्मक शक्ति के बल पर हमारे देश को प्रगति की, मानव सभ्यता की नई ऊंचाइयों तक ले जा सकते हैं। उदाहरण के तौर पर देखें तो आज से लगभग 9 वर्ष पहले शुरू किए गए 'स्वच्छ भारत अभियान' की सफलता में युवाओं का अभूतपूर्व योगदान रहा है। स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाने में, लोगों को प्रेरित करने में युवाओं ने प्रभावशाली योगदान दिया है। हमारे युवाओं में असीम प्रतिभा और ऊर्जा है। इस प्रतिभा और ऊर्जा का समुचित विकास और उपयोग किए जाने की जरूरत है। इस दिशा में प्रयास तेजी से किए जा रहे हैं और इन प्रयासों के परिणाम भी सामने आने लगे हैं। ज्ञान–विज्ञान और सूचना प्रौद्योगिकी

से लेकर, खेल के मैदान तक भारत के बेटे–बेटियां विश्व समुदाय पर अपनी छाप छोड़ रहे हैं। देश के कोने–कोने से नई–नई खेल प्रतिभाएं सामने आ रही हैं। खेल–कूद से हमारे अंदर टीम भावना का संचार होता है। सामाजिक सौहार्द और राष्ट्रीय एकता के लिए टीम भावना जगाने वाले ऐसे प्रयासों को बढ़ाने की जरूरत है।

आज Innovation, Incubation और Startup की नई धारा का नेतृत्व भारत में कौन कर रहा है? आज यदि अगर भारत दुनिया के Startup Ecosystem में टॉप तीन देशों में आ गया है, तो इसके पीछे किसका परिश्रम है? आज भारत दुनिया में यूनिकॉर्न पैदा करने वाला, एक बिलियन डॉलर से ज्यादा की नई कंपनी बनाने वाला तीसरा सबसे बड़ा देश बना है, तो इसके पीछे किसकी ताकत है? इन सब सवालों का एक ही जवाब है, युवा। युवाओं की मेहनत और समर्पण के दम पर ही भारत आज नेतृत्वकारी भूमिका निभा रहा है।

आज से 10 साल पहले हमारे देश में औसतन चार हजार पेटेंट प्रतिवर्ष होते थे। अब इसकी संख्या बढ़कर सालाना 15 हजार पेटेंट से ज्यादा हो गई है, यानी करीब–करीब चार गुना। ये किसकी मेहनत से हो रहा है। कौन है इसके पीछे? मैं फिर से दोहराता हूं। इसके पीछे युवा ही हैं, नौजवान साथी हैं, युवाओं की ताकत है। 26 हजार नए स्टार्टअप का खुलना दुनिया के किसी भी देश का सपना हो सकता है। ये सपना आज भारत में सच हुआ है। तो इसके पीछे भारत के नौजवानों की ही शक्ति है, उन्हीं के सपने हैं। भारत के नौजवानों ने अपने सपनों को देश की जरूरतों से जोड़ा है, देश की आशाओं और आकांक्षाओं से जोड़ा है। देश के निर्माण का काम मेरा है, मेरे लिए है और मुझे ही करना है। इस भावना से भारत का नौजवान आज भरा हुआ है। आज देश का युवा नए–नए ऐप्स बना रहा है, ताकि खुद की जिंदगी भी आसान हो और देशवासियों की भी मदद हो जाए। आज देश का युवा हैकाथॉन के माध्यम से, तकनीक के माध्यम से, देश की हजारों समस्याओं का समाधान खोज रहा है। आज देश का युवा ये नहीं देख रहा कि ये योजना शुरू किसने की, वो आज खुद नेतृत्व करने के लिए आगे आ रहा है। आज देश के युवाओं के सामर्थ्य से नए भारत का निर्माण हो रहा है। एक ऐसा नया भारत, जिसमें Ease of Doing Business भी हो और Ease of Living भी हो। एक ऐसा नया भारत,

हमें एक ऐसा भारत बनाना है, जिसकी जड़ें प्राचीन परंपराओं और विरासत से जुड़ी होंगी और जिसका विस्तार आधुनिकता के आकाश में अनंत तक होगा। हमें अपनी संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों को जीवंत रखना है।

जिसमें लाल बत्ती कल्चर नहीं है, जिसमें हर इंसान बराबर है, हर इंसान महत्वपूर्ण है। एक ऐसा नया भारत, जिसमें अवसर भी हैं और उड़ने के लिए पूरा आसमान भी।

विश्व स्तर पर श्रेष्ठ प्रदर्शन करके भारत के युवा आज आर्थिक विकास और राष्ट्रीय अर्थव्यस्था के लिए 'मेरूदंड' सिद्ध हो रहे हैं। ऐसा नहीं है कि भारत ने अपनी वैश्विक शक्ति किसी से उधार में ली है। अतीत में भारत विश्व गुरु की उपाधि से विभूषित रहा है। भारतीय युवा शक्ति का लोहा अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा भी मानते थे, तभी उन्होंने समय–समय पर भोग में लिप्त अमेरिका के युवाओं को भारत से सीख लेने का परामर्श दिया था। भारत इस समय बहुत ही सुनहरे दौर से गुजर रहा है। हमारे देश में इस समय युवाओं की संख्या ज्यादा है। जिस देश में युवाओं की आबादी जितनी ज्यादा हो, वह उतनी ही तेजी से तरक्की करता है। इतिहास इसका गवाह है। ऐसे में यह सभी की जिम्मेदारी होनी चाहिए कि युवाओं की ऊर्जा नष्ट न होने पाए। उन्हें सभी क्षेत्रों में ज्यादा से ज्यादा अवसर मुहैया कराए जाने चाहिए।

हमारे ऋषियों ने उपनिषदों में 'तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मामृतं गमय' की प्रार्थना की है। यानी, हम अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ें। परेशानियों से अमृत की ओर बढ़ें। अमृत और अमरत्व का रास्ता बिना ज्ञान के प्रकाशित नहीं होता। इसलिए, अमृतकाल का ये समय हमारे ज्ञान, शोध और इनोवेशन का समय है। हमें एक ऐसा भारत बनाना है, जिसकी जड़ें प्राचीन परंपराओं और विरासत से जुड़ी होंगी और जिसका विस्तार आधुनिकता के आकाश में अनंत तक होगा। हमें अपनी संस्कृति, अपनी सभ्यता, अपने संस्कारों को जीवंत रखना है। अपनी आध्यात्मिकता को, अपनी विविधता को संरक्षित और संवर्धित करना है। और साथ ही, टेक्नोलॉजी, इंफ्रास्ट्रक्चर, एजुकेशन, हेल्थ की व्यवस्थाओं को निरंतर आधुनिक भी बनाना है। प्रख्यात कवि भीम भोई जी की कविता की एक पंक्ति है–

मो जीवन पछे नर्के पड़ी थाउ,
जगत उद्धार हेउ।

अर्थात्, अपने जीवन के हित–अहित से बड़ा जगत कल्याण के लिए कार्य करना होता है। जगत कल्याण की इसी भावना के साथ हमारा कर्तव्य है कि हम सभी को पूरी निष्ठा व लगन के साथ काम करना होगा। हम सभी एकजुट होकर समर्पित भाव से कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ेंगे, तभी वैभवशाली और आत्मनिर्भर भारत का निर्माण होगा। ■

राष्ट्र जागरण में महिलाओं की भागीदारी

डॉ. प्रीता पंवार
तकनीकी-प्रबंध सलाहकार

प्राचीन भारत में सीता, सावित्री, अरुंधती, लोपामुद्रा, अपाला और अनुसूया जैसी अनेक विदुषी एवं ब्रह्मवादिनी स्त्रियों ने अपनी भागीदारी से समाज और राष्ट्र जागरण में अप्रितम योगदान दिया है। कालांतर में समय के कुचक्र ने समानता, बंधुत्व और ज्ञान की धारा को दिशाहीन करने की कोशिश की, लेकिन पुन: सनातन संस्कृति के मूल्यों और कुशल नेतृत्व में राष्ट्र जागरण में महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है। वैसे भी जिन राष्ट्रों में महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करतीं हैं, सम्मानित जीवन जीती हैं और कर्मठता के साथ परिवार, समाज व राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन करतीं हैं, वह राष्ट्र सदैव उन्नति करता है।

महिला जीवन की धुरी है, आदि शक्ति है। महिलाओं के बिना जीवन की परिकल्पना ही असंभव है। जिन राष्ट्रों में महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करतीं हैं, सम्मानित जीवन जीती हैं और कर्मठता के साथ परिवार, समाज व राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन करतीं हैं, वह राष्ट्र सदैव उन्नति करता है। ऐसा राष्ट्र न तो कभी पराधीन हो सकता और न कभी पिछड़ सकता है। इजराइल और जापान जैसे छोटे राष्ट्र इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। इजराइल अपने चारों ओर से शत्रुओं से घिरा हुआ है, किंतु फिर भी कोई मुल्क न उसे दबा पाया और न ही उसे तोड़ पाया। इसका मूलभूत कारण यह है कि इजराइल के विकास और जागरण में स्त्री-पुरुष दोनों का समान रूप से योगदान है। इजराइली स्त्रियां पुरुषों के समान ही गन और बंदूकों से सुसज्जित हो राष्ट्र की सुरक्षा करती हैं। इसी प्रकार जापान भी कम चुनौतियों का शिकार नहीं रहा है। जापान दुनिया का पहला ऐसा मुल्क है जिस पर परमाणु बम से हमला किया गया। आए दिन जापान समुद्री सुनामी तथा भूकंप जैसे प्राकृतिक आपदाओं का शिकार होता रहता है। फिर भी जापान गिर-गिर कर खड़ा हो जाता है, जागृत हो उठता है, क्योंकि वहां राष्ट्र जागरण में महिलाओं की समान भागीदारी है। वहां की कर्मठ महिलाएं देश हित में बढ़-चढ़ कर कार्य करतीं हैं। परिणाम सबके समक्ष है। जापान प्रत्येक दृष्टि से एक विकसित राष्ट्र है। इसके विपरीत ईरान, इराक, अफगानिस्तान, पकिस्तान आदि वो राष्ट्र हैं, जहां नारी शक्ति को दबा कर रखा जाता है। ऐसे राष्ट्र पिछड़ेपन, अज्ञानता व दरिद्रता के अंतिम पायदानों पर खड़ें हैं। अतः स्पष्ट है कि राष्ट्र जागरण में महिलाओं की महती भूमिका है।

वहीं भारत वर्ष एक संपन्न परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों से समृद्ध देश है, जहां महिलाओं का समाज व राष्ट्र में प्रमुख स्थान रहा है। दुर्भाग्य से विदेशी शासनकाल में समाज में अनेक कुरीतियां व विकृतियां पैदा हुईं,

जिससे महिलाओं का बहुत उत्पीड़न हुआ। स्वतंत्रता के बाद महिलाओं की समाज में भागीदारी बढ़ी व उनका सम्मान भी बढ़ा, किंतु उनके सशक्तिकरण की गति दशकों तक बहुत ही धीमी रही। गरीबी व निरक्षरता उनकी प्रगति में बड़ी बाधक बनी। भारतीय महिलाएं ऊर्जा से पूर्ण, दूरदर्शिता, जीवंत, उत्साहित और प्रतिबद्धता के साथ समस्त चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हैं। भारत के प्रथम नोबल पुरस्कार विजेता रवींद्र नाथ टैगोर के शब्दों में, 'हमारे लिए महिलाएं न केवल घर की रोशनी हैं, बल्कि इस रोशनी की लौ भी हैं।' अनादि काल से ही भारत के राष्ट्रीय जागरण में महिलाएं प्रेरणा का स्रोत रहीं हैं। प्राचीन भारत में सीता, सावित्री, अरुंधती, लोपामुद्रा, अपाला और अनुसूया जैसी महान स्त्रियों नें अपने ज्ञान के माध्यम से मानव जीवन को एक सकारात्मक मार्ग दिखाया। बाद के समय में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई से लेकर भारत की पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले तक सभी ने राष्ट्र जागरण में महती भूमिका निभाई हैं। मिताली राज, पीवी सिंधू, मैरी काम, अवनि लेखरा जैसी महिलाओं खिलाड़ियों ने न केवल राष्ट्रीय मान को बढ़ाया है, बल्कि संदेश भी दिया है कि तमाम अवरोधों के बावजूद भी महिलाएं कठिन से कठिन कार्य करने का साहस रखतीं हैं। इसी श्रृंखला में अनेक नाम हैं जैसे पहली महिला कमर्शियल पायलट कैप्टन प्रेमा माथुर, पहली महिला आईपीएस अधिकारी किरण बेदी, सुप्रीम कोर्ट की पहली महिला न्यायाधीश फातिमा बीबी, भारतीय नौसेना में लेफ्टिनेंट जनरल पद तक पहुंचने वाली पहली महिला पुनीता अरोड़ा, पहली एक बिलियन नेटवर्थ वाली भारतीय महिला बिजनेसमैन किरण मजुमदार शा, पहली भारतीय महिला चिकित्सक आनंदी बाई गोपालराव, संतोष यादव पहली महिला, जिसनें हिमालय फतह किया। इस तरह अनेक महिलाओं ने राष्ट्र के उत्थान और जागरण के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए। इसी कड़ी में गणतन्त्र दिवस परेड पर पहली बार तीनों सेनाओं की महिला टुकड़ियों का मार्च रहा। परेड में 48 महिला अग्निवीरों ने करतब दिखाए। इसके साथ ही महिला फाइटर पायलटों ने

महिला ही राष्ट्र में अच्छे नागरिक गढ़ने की मूलभूत इकाई होती है। चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो, चिकित्सा का या विकास के अन्य कार्य हों, महिलाओं की सहभागिता के बिना राष्ट्र का विकास संभव ही नहीं।

भी अपने हैरतअंगेज साहस का परिचय दिया। परेड की शुरुआत भी 100 महिला कलाकारों द्वारा वाद्यों के साथ हुई। इस बार झांकियों से लेकर परेड और थीम तक के केन्द्र में महिलाएं रहीं। संदेश स्पष्ट है कि भारत के पुनर्निर्माण और जागरण मे महिलाओं की महती भूमिका होने वाली है, क्योंकि राष्ट्र जागरण में जितनी भागीदारी पुरुषों की होती है उतनी महिलाओं की भी।

दुनिया के विकसित और विकासशील देशों में अंतर यही होता है कि वहां महिलाएं साक्षर, स्वस्थ और जागरूक होती हैं, जबकि विकासशील देशों में महिलाओं के सर्वांगीण विकास को नज़रअंदाज किया जाता है। इसलिए उन्हें विकसित होने में अधिक समय लग जाता है। महिला ही राष्ट्र में अच्छे नागरिक गढ़ने की मूलभूत इकाई होती है। चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो, चिकित्सा का या विकास के अन्य कार्य हों, महिलाओं की सहभागिता के बिना राष्ट्र का विकास संभव ही नहीं। यदि इस मूलभूत इकाई का ही ध्यान नहीं रखा जाएगा, तो राष्ट्र जागरण कैसे संभव होगा। महिलाओं में जन्मजात नेतृत्व गुण समाज और राष्ट्र के लिए संपत्ति है। यही कारण है कि जब हम एक पुरुष को शिक्षित करते हैं, तो केवल एक व्यक्ति शिक्षित होता है किंतु यदि हम एक महिला को शिक्षित करतें हैं, तो समूची पीढ़ी को शिक्षित करतें हैं।

भारत में राष्ट्र जागरण में महिलाओं की भागीदारी बढ़े, इसके लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाओं को शुरू किया है, जैसे स्टैंड अप इंडिया, स्टार्ट अप, महिला उद्यमिता मंच पोर्टल, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ आदि। 2030 तक राष्ट्र को मानवता का समान स्थान बनाने के लिए भारत सतत विकास लक्ष्यों की ओर तेजी से बढ़ चला है। लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण करना सतत् विकास लक्ष्यों में प्रमुख है। वर्तमान में प्रबंधन, पर्यावरण संरक्षण, समावेशी आर्थिक और सामाजिक विकास जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए विशेष ध्यान दिया गया है। महिलाओं की आधी आबादी है और इस आधी आबादी का राष्ट्र की उन्नति व जागरण में योगदान को नकारा नहीं जा सकता है। ■

ज्ञानवापी मुक्ति संघर्ष का इतिहास

प्रो. ओम प्रकाश सिंह
पूर्व निदेशक एवं प्रोफेसर, महामना मालवीय पत्रकारिता संस्थान महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

व्यास जी तहखाने में फिर शुरू पूजा

वाराणसी स्थित ज्ञानवापी के उत्तर में विश्वेश्वर का उल्लेख पुराणों में है। यहां पर विद्यमान विश्वेश्वर मंदिर को औरंगजेब ने तुड़वाया। उसी स्थान पर निर्मित ज्ञानवापी मस्जिद और व्यास तहखाना एवं श्रृंगारगौरी का विवाद न्यायालय में है। हिन्दू पक्ष ज्ञानवापी क्षेत्र में औरंगजेब के विध्वंश की पूर्व स्थिति के अनुसार मंदिर एवं पूजा का अधिकार चाहता है। जबकि मुस्लिम पक्ष इस ममाले में इतिहास की सच्चाई को स्वीकारने को तैयार नहीं हैं। जनपद न्यायालय ने ज्ञानवापी के व्यास जी तहखाने में चल रही पुरानी पूजा को फिर से शुरू करने की अनुमति दी और पूजा शुरू हुई।

तीन दशक बाद वाराणसी स्थित ज्ञानवापी परिसर के व्यास जी तहखाने में एक बार फिर से पूजा शुरू हो चुकी है। तब से ज्ञानवापी चर्चा में है। हालांकि काशी की महिमा शिव की नगरी के रूप में है। काशी मोक्ष देने वाली सात पुरियों में से एक है। इसके अनेक नाम हैं। यह ज्ञान देने वाली विश्व की प्राचीनतम नगरी है। इसे वाराणसी एवं बनारस भी कहते हैं। इसे भगवान शिव ने स्वयं बनाया। इसका प्राचीनतम नाम आनन्द कानन है। यहां आदि ज्योतिर्लिंग अविमुक्तेश्वर रूप में भगवान विश्वेश्वर निवास करते हैं। इसी काशी में भगवान शिव निर्मित ज्ञानवापी है। ज्ञानवापी के उत्तर में विश्वेश्वर (अविमुक्तेश्वर ज्योतिर्लिंग विराजमान हैं) का उल्लेख पुराणों में है। इस स्थान पर विद्यमान विश्वेश्वर मंदिर को औरंगजेब ने तुड़वाया। उसी स्थान पर निर्मित ज्ञानवापी मस्जिद और उसी से जुड़े व्यास जी तहखाना एवं श्रृंगारगौरी का विवाद न्यायालय में है। हिन्दू पक्ष ज्ञानवापी क्षेत्र में औरंगजेब के विध्वंश की पूर्व स्थिति के अनुसार मंदिर एवं पूजा का अधिकार चाहता है। जबकि मुस्लिम पक्ष इस ममाले में इतिहास की सच्चाई को स्वीकारने को तैयार नहीं हैं इस विवाद के समस्त संदर्भ इस प्रकार है। -

पुनः शुरु पूजा : 31 जनवरी 2024 का दिन ज्ञानवापी तहखाने के इतिहास में महत्वपूर्ण है। इसी दिन वाराणसी के जिला न्यायालय ने हिन्दुओं के पक्ष में महत्वपूर्ण निर्णय दिया। इस निर्णय से ज्ञानवापी के व्यास जी तहखाने में हिन्दुओं को पुनः पूजा का अधिकार मिला। इसी के साथ जिला न्यायालय, वाराणसी ने स्थानीय प्रशासन को बैरिकेडिंग के अन्दर 7 दिन में पूजा की व्यवस्था पूर्व की भांति करने का आदेश दिया। वाराणसी के जिला जज डॉ. अजय कृष्ण के आदेश का पालन वाराणसी जिला प्रशासन ने कुछ ही घंटों में किया। इस आदेश से नवम्बर 1993 से बन्द व्यास जी तहखाने में पूजा पुनः करीब 30 साल बाद प्रारम्भ हो सकी है। इस संदर्भ में यह महत्वपूर्ण है कि औरंगजेब द्वारा विश्वेश्वर मंदिर पर बनवायी मस्जिद इसी व्यास जी तहखाने के ऊपर है। यहां1993 तक पूजा एवं अन्य व्यवस्था देखने वाले व्यास परिवार के पं. सोमनाथ ने बिना किसी आदेश के सील होने के बाद पूजा के अधिकार के लिए जिला न्यायालय में वाद कायम किया। वर्ष 2000 में उनके निधन के बाद भी अधिवक्ता राजेन्द्र पाण्डेय ने मुकदमे को जारी रखा। इसी के साथ-साथ व्यास पीठ के उत्तराधिकारी पं शैलेन्द्र पाठक ने भी मुकदमें में भागीदारी के साथ ही व्यास जी तहखाने को जिला प्रशासन को सौंपने का निवेदन जिला न्यायालय से किया। कोर्ट ने इसे स्वीकार करते हुए इसको जिला प्रशासन को सौंप दिया। जिला प्रशासन ने 17 जनवरी, 2024 को व्यास तहखाने को अपने नियंत्रण में ले लिया। इसी तहखाने में कोर्ट के आदेश से 31 जनवरी, 2024 से पुनः पूजा अर्चना प्रारम्भ हुई।

शास्त्रीय विधान से प्रतिमाओं की वापसी : व्यास जी तहखाने की प्रतिमाओं की विस्थापित कर कोषागार में रखा गया था। पूर्व की आठ

प्रतिमाओं को साफ सफाई के उपरान्त कोषागार से वापस लाकर वैदिक एवं शास्त्रीय पद्धति से पुनः स्थापित किया गया। इस पुनः प्रतिष्ठा समारोह के आचार्य, श्रीराम जन्मभूमि प्राण प्रतिष्ठा के मुख्य आचार्य पं. विश्वेश्वर शास्त्री थे। श्री काशी विश्वनाथ मंदिर के अर्चक पं. ओम प्रकाश मिश्र ने प्रतिमाओं का षोडशोपचार पूजन-अर्चन कर नियमित भोग आरती का पुनः आरम्भ किया। इसके पश्चात् जिला प्रशासन ने व्यास तहखाने को श्री काशी विश्वनाथ न्यास परिषद को सौंप दिया। वर्तमान में प्रतिदिन श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर की भांति आरती एवं भोग की व्यवस्था न्यास की और से जारी है। यहां पुनः स्थापित विग्रहों के दर्शन हेतु बड़ी संख्या में भक्त आ रहे हैं। स्थानीय प्रशासन द्वारा सुचारू दर्शन की व्यवस्था करायी है। यह ज्ञानवापी परिसर का भाग है। इस कारण ज्ञानवापी पर चर्चा जरूरी है।

काशी में ज्ञानवापी : ज्ञानवापी को पुराणों में काशी का केन्द्र कहा गया है। इसी के चारों ओर काशी का विस्तार है। पृथ्वी पर गंगा के आगमन से पूर्व ज्ञानवाणी का निर्माण भगवान शिव ने किया था। पुराणों के अनुसार भगवान शिव ने स्वयं के अभिषेक के लिए अपने त्रिशूल से ज्ञानवापी का जल निकाला था। इस के पश्चात यहीं पर माता पार्वती को ज्ञान दिया। इसी से इसका नाम ज्ञानवापी पड़ा। ऐसे प्राचीन हिन्दू उपासना के केन्द्र के नाम के साथ मस्जिद का नाम जुड़ना एक आश्चर्य है। पुराणों के अनुसार ज्ञानवापी का जल भगवान शिव का ही स्वरूप हैं -

योष्टमूर्तिमहादेवः पुराणे परिपठ्येत।
तैष्यैषांबुमयी मुर्तिर्ज्ञानदा ज्ञानवापिका।।
- स्कन्दपुराण

पुराणों के संदर्भ इसके प्रमाण हैं। उस समय में न तो मस्जिद थी न ही औरंगजेब का आस्तित्व। पुराणों में भगवान शिव के आदि ज्योतिर्लिंग अविमुक्तेश्वर अथवा विश्वेश्वर के दक्षिण में ज्ञानवापी के स्थित होने का उल्लेख है। लिंग पुराण में यह उल्लेख इस प्रकार हैं-

देवस्य दक्षिणी भागे वापी तिष्ठति शोभना।
तस्यात वोदकं पीत्वा पुनर्जन्म ना विद्यते।

अर्थात् विश्वेश्वर के दक्षिण भाग में स्थित वापी (ज्ञानवापी) का जल पीने से पुनर्जन्म से मुक्ति मिलती है। इसी कारण सन 1860 में नेपाल नरेश द्वारा विशाल नन्दी को यहीं स्थापित किया। नन्दी का मुख व्यास जी तहखाने की ओर है। पौराणिक मान्यता एवं मन्दिर के स्थापत्य के अनुसार नन्दी का मुख शिवलिंग की ओर तथा उत्तर दिशा में होता है। इसी के समीप ग्वालियर की महारानी द्वारा बनवाया ज्ञानवापी मंडप भी है। व्यास तहखाने के भीतर भगवान शिव, गणेश, कुबेर, हनुमान, तथा मां गंगा का आसन मगरमच्छ की मूर्तियां हैं। वर्तमान में व्यास जी तहखाने में पांच आरती प्रतिदिन होती है। ऐसे पवित्र क्षेत्र में अन्य उपासना पद्धति का दावा न्यायसंगत कैसे है?

ज्ञानवापी क्षेत्र में अविमुक्तेश्वर ज्योतिर्लिंग की पूजा अनादिकाल से मुक्ताकाश के नीचे चली आ रही थी। इस ज्योतिर्लिंग पर मंदिर का निर्माण 11वीं सदी में राजा हरिश्चन्द्र ने कराया। इसी का जीर्णोद्धार सम्राट विक्रमादित्य द्वारा कराया गया। सम्राट विक्रमादित्य द्वारा निर्मित अविमुक्तेश्वर मंदिर का विध्वंश 1194 में मुहम्मद गौरी ने किया। स्थानीय लोगों ने 1447 में इस मंदिर का पुनः निर्माण कराया, जिसे जौनपुर के शर्की सुल्तान महमूद द्वारा तोड़ा गया। 1585 के आसपास में राजा टोडरमल ने पं. नारायण भट्ट के परामर्श से पुनः भव्य मंदिर का निर्माण कराया। 1632 में शाहजहां के शासनकाल में इस मंदिर को तोड़ने का पुनः प्रयास हुआ। जो कि असफल रहा। 18 अप्रैल 1669 को औरंगजेब ने काशी विश्वनाथ मंदिर को ध्वस्त करने का आदेश दिया। (यह फरमान एशियाटिक लाइब्रेरी कोलकाता में सुरक्षित है) 2 सितम्बर, 1669 को मंदिर तोड़ने का कार्य पूरा होने की सूचना औरंगजेब को दी गयी थी। इस के पश्चात् ज्ञानवापी परिसर में मंदिर पर मस्जिद का निर्माण कराया। काशी विश्वनाथ मंदिर टूटने के लगभग 125 वर्ष बाद इंदौर की महारानी अहिल्या बाई ने 1735 में ज्ञानवापी के दक्षिण में वर्तमान श्रीकाशी विश्वनाथ के नये मंदिर का निर्माण कराया। इस ढांचे के पश्चिमी भाग में अब भी मन्दिर का टूटा गर्भगृह अपनी गवाही दे रहा है। 25 जनवरी, 2024 को वाराणसी न्यायालय में प्रस्तुत हुए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की रिपोर्ट में इसका वर्णन है। यहीं पर श्रृंगार गौरी भी हैं। इसके अलावा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की रिपोर्टि में ज्ञानवापी मस्जिद क्षेत्र में पूर्व में मंदिर होने का प्रमाण प्रस्तुत किया है। इस सम्बन्ध मे एएसआई ने लगभग 839 पृष्ठों की रिपोर्ट प्रस्तुत किया है।

अविमुक्तेश्वर मंदिर मुक्ति संघर्ष : इसी मध्य 1883–84 में राजस्व अभिलेखों में ज्ञानवापी मस्जिद का उल्लेख पहली बार किया गया। 1984 में काशी विश्वनाथ मंदिर मुक्ति का संघर्ष राष्ट्रव्यापी बना। 1991 में पं. सोमनाथ व्यास, प्रो. राम रंग शर्मा एवं हरिहर पाण्डेय ने मस्जिद सहित सम्पूर्ण परिसर के सर्वेक्षण और उपासना के लिए वाराणसी न्यायालय में मुकदमा दायर किया। 1991 से 2020 के मध्य यह विवाद स्थानीय, उच्च एवं सर्वोच्च न्यायालयों में झूलता रहा। अगस्त, 2021 में उस समय उक्त मामले में एक नया मोड़ आया, जब पांच हिन्दू महिलाओं- राखी सिंह, लक्ष्मी देवी, सीता साहू, मंजू व्यास एवं रेखा पाठक ने ज्ञानवापी परिसर स्थित श्रृंगार गौरी के प्रतिदिन दर्शन एवं पूजन के लिए वाराणसी, न्यापालप में मुकदमा किया। इसी क्रम में अप्रैल, 2022 में सिविल कोर्ट वाराणसी ने ज्ञानवापी मस्जिद के सर्वेक्षण का आदेश दिया। जिसे इलाहाबाद (प्रयागराज) हाईकोर्ट ने मान्य किया। इस मुकदमे में अधिवक्ता विष्णु जैन एवं हरिशंकर जैन रहे। इसी मुकदमें में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की रिपोर्ट न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत हो चुकी है।

इस प्रकार ऐतिहासकि एवं पुरातत्व साक्ष्यों से स्पष्ट है कि औरंगजेब के आदेश पर विश्वनाथ मंदिर को ध्वस्त करके मस्जिद बनाई गयी। स्वयंभू ज्यातिर्लिंग की पूजा का अधिकार उसी प्रकार मिले जैसा औरंगजेब द्वारा मंदिर ध्वस्त कराने के आदेश के पूर्व में था। उस स्थान पर भगवान शिव का मंदिर पुनः कायम हो यही भक्तों की इच्छा है। ■

सनातन के संवर्धन का प्रतीक अबू धाबी मंदिर

अबू धाबी का विशाल मंदिर केवल एक उपासना स्थली ही नहीं है, बल्कि ये मानवता की साझी विरासत और सनातन के संवर्धन का प्रतीक है। यह मंदिर वैश्विक स्तर पर प्राचीन भारत के स्वर्णिम इतिहास का नया अध्याय है। जहां पूरी दुनिया भारत के नेतृत्व और सनातन धर्म की जय-जयकार कर रही है।

राघवेन्द्र सैनी
स्वतंत्र पत्रकार एवं अधिवक्ता
उच्च न्यायालय, लखनऊ

भारतीय इतिहास में एक दौर था, जब सनातन धर्म की पताका विश्व में फहरा रही थी, लेकिन काल चक्र के थपेड़ों ने इस धर्म रथ की गतिशीलता पर विराम लगा दिया। हां समय बदला, नेतृत्व बदला और एक बार पुनः कुशल नेतृत्व में संपूर्ण विश्व में सनातन मूल्यों की स्थापना हो रही है। उसी रुके हुए क्रम का नया विस्तार है अबू धाबी का मंदिर। वसंत पंचमी के शुभ दिन पर अबू धाबी में नवनिर्मित बीएपीएस मंदिर में इस संस्था के गुरु परम पूज्य महंत स्वामीजी महाराज के कर कमलों द्वारा प्राण प्रतिष्ठा की विधि को संपन्न किया गया। इस वैदिक विधि में सर्वप्रथम मंदिर के मध्य खंड में परब्रह्म भगवान स्वामीनारायण और उनके अनुगामी अक्षरब्रह्म गुणातीतानंद स्वामी की प्राण प्रतिष्ठा की गई। तत्पश्चात इस संप्रदाय की गुरु परंपरा में अन्य गुरुओं की प्रतिष्ठा की गई। यहां उल्लेखनीय है कि ब्रह्मस्वरूप शास्त्री जी महाराज द्वारा वर्ष 1907 में बीएपीएस की स्थापना की गई थी और उन्हीं के शिष्य परम पूज्य प्रमुख स्वामीजी महाराज के सृजन का संकल्प वर्ष 1997 में किया गया था। यह शुभ संयोग ही है कि अब परम पूज्य शास्त्रीजी महाराज की जयंती पर अबू धाबी में इस हिंदू मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा हुई। इस तरह संकल्प सिद्ध मे बदला।

उद्घाटन के अवसर प्रधानमंत्री ने संबोधन में कहा कि यूनाइटेड अरब अमीरात की धरती ने मानवीय इतिहास का एक नया स्वर्णिम अध्याय लिखा है। अबू धाबी में भव्य और दिव्य मंदिर लोकार्पण के इस पल के पीछे वर्षों की मेहनत लगी है। इसमें वर्षों पुराना सपना जुड़ा हुआ है। पीएम ने कहा कि पूज्य प्रमुख स्वामी जी के साथ मेरा नाता एक प्रकार से पिता पुत्र का नाता रहा। मेरे लिए एक पितृ तुल्य भाव से जीवन के एक लंबे कालखंड तक उनका सानिध्य मिलता रहा। उनका आशीर्वाद मिलता रहे और शायद कुछ लोगों को सुनकर आश्चर्य होगा कि मैं सीएम था तब भी, पीएम था तब भी, अगर कोई चीज उनको पसंद नहीं आती थी, तो मुझे स्पष्ट शब्दों में मार्गदर्शन करते थे। और जब दिल्ली में अक्षरधाम का निर्माण हो रहा था, तो उनके आशीर्वाद से मैं शिलान्यास कार्यक्रम में था, तब तो मैं राजनीति में भी कुछ नहीं था। उस दिन मैंने कहा था कि गुरु जी की हम बहुत तारीफ तो करते रहते हैं, लेकिन कभी सोचा है कि किसी गुरु ने कहा कि यमुना के तट पर अपना भी कोई स्थान हो, और शिष्यरूपी हो। प्रमुख स्वामी महाराज ने अपने गुरु की उस इच्छा को परिपूर्ण कर दिया था। आज मैं भी उसी एक शिष्य भाव से यहां आपके सामने उपस्थित हूं। मुझे आशा है कि ये मंदिर भी मानवता के लिए, बेहतर भविष्य के लिए वसंत का स्वागत करेगा। ये मंदिर पूरी दुनिया के लिए सांप्रदायिक सौहार्द और वैश्विक एकता का प्रतीक बनेगा।

प्रधानमंत्री ने कहा कि यूएई प्रेसिडेंट की पूरी गवर्नमेंट ने कितने बड़े दिल से करोड़ों भारतवासियों की इच्छा को पूरा किया है।

और इन्होंने सिर्फ यहां नहीं 140 करोड़ हिन्दुस्तानियों के दिल को जीत लिया है। मैं इस मंदिर के विचार लेकर एक प्रकार से प्रमुख स्वामी जी का स्वप्न जो बाद में विचार में परिवर्तित हुआ। उन्होंने मंदिर के लिए बहुत कम समय में ही इतनी बड़ी जमीन भी उपलब्ध करवाई। यही नहीं, मंदिर से जुड़े एक और विषय का समाधान किया। मैं साल 2018 में जब दोबारा यूएई आया तो यहां संतों ने मुझे जिसका ब्रह्मविहारी स्वामी जी ने अभी जिसका वर्णन किया। मंदिर के दो मॉडल दिखाए। एक मॉडल भारत की प्राचीन वैदिक शैली पर आधारित भव्य मंदिर का था, जो हम देख रहे हैं। दूसरा एक सामान्य सा मॉडल था, जिसमें बाहर से कोई हिंदू धार्मिक चिन्ह नहीं थे। संतों ने मुझे कहा कि यूएई की सरकार जिस मॉडल को स्वीकार करेगी उसी पर आगे काम होगा। जब ये सवाल सेख मोहम्मद के पास गया, तो उनकी सोच साफ एक दम साफ थी। उनका कहना था कि अबू धाबी में जो मंदिर बने वो अपने पूरे वैभव और गौरव के साथ बने। वे चाहते थे कि यहां सिर्फ मंदिर बने ही नहीं, बल्कि वो मंदिर जैसा दिखे भी। ये छोटी बात नहीं है, ये बहुत बड़ी बात है। भारत से बंधुत्व की ये भावना वाकई हमारी बहुत बड़ी पूंजी है। प्रधानमंत्री ने कहा कि अब तक जो यूएई बुर्ज खलीफा, फ्यूचर म्यूजियम, शेख जायद मस्जिद और दूसरी हाईटेक बिल्डिंग के लिए जाना जाता था। अब उसकी पहचान में एक और सांस्कृतिक अध्याय जुड़ गया है। मुझे विश्वास है कि आने वाले समय में यहां बड़ी संख्या में श्रद्धालु आएंगे। इससे यूएई आने वाले लोगों की संख्या भी बढ़ेगी और लोगों में आपसी संपर्क भी बढ़ेगा।

प्रधानमंत्री मोदी ने आगे कहा कि ये समय भारत के अमृत काल का समय है, ये हमारी आस्था और संस्कृति के लिए भी अमृत काल का समय है। और अभी जनवरी में अयोध्या में भव्य राम मंदिर का सदियों पुराना सपना पूरा हुआ है। रामलला अपने भवन में विराजमान हुए हैं। पूरा भारत और हर भारतीय उस प्रेम में, उस भाव में अभी तक डूबा हुआ है। उन्होंने कहा कि अयोध्या के हमारे उस परम आनंद को अबू धाबी में मिली खुशी की लहर ने और बढ़ा दिया है। मेरा सौभाग्य है कि मैंने पहले अयोध्या में भव्य श्रीराम मंदिर और फिर अब अबू धाबी में इस मंदिर का साक्षी बना हूं। हमारे वेदों ने कहा है 'एकम् सत् विप्रा बहुधा वदन्ति' अर्थात एक ही ईश्वर को, एक ही सत्य को विद्वान लोग अलग-अलग तरह से बताते हैं। ये दर्शन भारत की मूल चेतना का हिस्सा है। इसलिए हम स्वभाव से ही न केवल सबको स्वीकार करते हैं, बल्कि सबका स्वागत भी करते हैं। हमें विविधता में बैर नहीं दिखता, हमें विविधता ही विशेषता लगती है। आज वैश्विक संघर्षों और चुनौतियों के सामने ये विचार हमें एक विश्वास देता है। मानवता में हमारे विश्वास को मजबूत करता है। इस तरह अबू धाबी में मंदिर के उद्घाटन के अवसर पर वहां पर हजारों भारतीय समुदाय के लोगों के साथ अन्य देश के सनातन प्रेमी भी उपस्थित रहे। इसके अलावा भारत के राष्ट्रीय सलाहकार अजीत डोभाल और अभिनेता अक्षय कुमार, विवेक ओबेरॉय सहित कई अन्य लोग भी कार्यक्रम में शामिल थे।

महत्वपूर्ण तथ्य

-आबू धाबी का मंदिर नागर शैली में बना है।

-वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना का वाहक है यह मंदिर।

- उच्च शंखनाद और मंत्रोच्चारण के बीच प्रधानमंत्री ने पवित्र कुंड में जल अर्पण कर आरती भी किया।

- अभिनेता अक्षय कुमार, विवेक ओबेरॉय कार्यक्रम में शामिल थे।

आवासीय निर्माण के क्षेत्र में आगे बढ़ता भारत

प्रहलाद सबनानी
सेनानिवृत उप महाप्रबंधक भारतीय स्टेट बैंक

देश में आवास की समस्या को खत्म करने के लिए केंद्र सरकार प्रतिबद्ध है। इसी क्रम में केन्द्र सरकार आवास के लिए नित नये लक्ष्य को निर्धारित कर उसे तय समय सीमा में पूरा भी कर रही है। इससे आने वाले समय में भारत में प्रत्येक के पास अपना आवास होगा।

भारत में किसी परिवार के पास रहने के लिए यदि अपनी छत है तो इसे उस परिवार की समृद्धि से जोड़कर देखा जाता है। आर्थिक समृद्धि के शुरुआती दौर में केवल अपनी छत होने को ही उस परिवार विशेष के लिए आर्थिक सफलता का एक पैमाना माना जाता है। परंतु, धीरे-धीरे वह परिवार आर्थिक तरक्की करते-करते इस स्तर पर पहुंच जाता है कि उसे छोटे से मकान के स्थान पर सर्वसुविधा युक्त एक बड़े मकान की आवश्यकता महसूस होने लगती है। इस प्रकार का आर्थिक विकास किसी भी देश के लिए शुभ माना जा सकता है। हाल के समय में भारत में भी यह सब होता हुआ दिखाई दे रहा है। अभी पिछले दिनों दिल्ली के पास गुरुग्राम में एक सर्वसुविधा युक्त आवासीय प्रोजेक्ट की घोषणा की गई थी। इस आवासीय प्रोजेक्ट में 7,200 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले 1113 फलैट्स मात्र 3 दिन में ही बिक गए थे। यह भारत की आर्थिक सम्पन्नता को दर्शाता है। वैसे भी भारत में मकान खरीदने को एक ड्रीम प्रोजेक्ट के रूप में देखा जाता है और इसे भावनात्मक अनुभव एवं वित्तीय सुरक्षा की गारंटी माना जाता है। इस दृष्टि से भारत में आवासीय निर्माण के लिए वर्ष 2023 एक अति सफल वर्ष साबित हुआ है और इसके आधार पर यह कहा जा रहा है कि वर्ष 2024 इससे भी अधिक बढ़िया वर्ष साबित होने जा रहा है।

विदेशी आक्रांताओं एवं अंग्रेजों द्वारा भारत को 1000 से अधिक वर्षों के दौरान लूटा-खसोटा गया है। अब जाकर भारत का पुनर्निर्माण काल प्रारम्भ हुआ है। अभी तक भारतीय नागरिकों का लक्ष्य अपने सर पर छत होना अधिक महत्वपूर्ण कार्य था परंतु अब इसे सर्वसुविधा युक्त आवास के रूप में भी विकसित किया जा रहा है। भारत को मिली राजनीतिक स्वतंत्रता के बाद के समय से विभिन्न सरकारों द्वारा देश में पब्लिक हाउसिंग प्रोजेक्ट प्रारम्भ किए गए थे। इन प्रोजेक्ट के माध्यम से नागरिकों के लिए घर बनाकर उपलब्ध कराए जाते रहे हैं। साथ ही, बाद के खंड काल में सरकारों द्वारा देश में भूमि सुधार कार्यक्रम भी लागू किए गए ताकि खाली पड़ी जमीन को शहरों में रिहायशी इलाकों के तौर पर विकसित किया जा सके। इन भूमि सुधार कार्यक्रमों को लागू करने के बाद निजी क्षेत्र में भी रिहायशी मकानों को बनाने की अनुमति प्रदान की गई। इसके बाद से तो देश में सर्व सुविधा युक्त आवासीय प्रोजेक्ट की जैसे बाढ़ ही आ गई। इन विभिन्न प्रोजेक्ट के अंतर्गत निर्मित होने वाले सर्व सुविधा युक्त मकान हाथों-हाथ बिकने भी लगे। अब तो देश में बड़े-बड़े रिहायशी मकान के प्रोजेक्ट, सूचना प्रौद्योगिकी पार्क, शॉपिंग माल्स आदि भारी मात्रा में विकसित किए जा रहे हैं। इसके अलावा अति महंगे एवं बड़े आकार के फलैट्स भी भारत में आसानी से उपलब्ध हैं। वर्ष 2024 में भारत का रियल एस्टेट बाजार अब पूरे विश्व में सबसे तेज गति से आगे बढ़ता बाजार बन गया है। आज भारत के समस्त बड़े महानगरों में एक बात सामान्य सी नजर आती है कि यहां बहुमंजिला इमारतों का निर्माण कार्य बहुत तेजी से चल रहा है। वर्ष 2023 में भारत का रियल एस्टेट बाजार लगभग 26,500 करोड़ अमेरिकी डॉलर का था जो

2030 में बढ़कर एक लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर का हो जाने वाला है और 2047 तक 5.8 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर का।

आवासीय निर्माण के क्षेत्र में केंद्र सरकार अपना भरपूर योगदान दे रही है। वर्ष 2014 में केंद्र में मोदी सरकार के आने के बाद 25 जून 2015 को प्रधानमंत्री आवास योजना इस उद्देश्य के साथ प्रारम्भ की गई थी कि गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाले प्रत्येक परिवार को अपना घर उपलब्ध कराया जा सके। इस योजना के अंतर्गत केंद्र सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में मार्च 2024 तक बुनियादी सुविधाओं से युक्त 2.95 करोड़ पक्के मकान बनाने का लक्ष्य तय किया है। इस लक्ष्य के विरुद्ध 2.94 करोड़ से अधिक मकान स्वीकृत किए जा चुके हैं। इसी प्रकार, प्रधानमंत्री शहरी आवास योजना के अंतर्गत शहरी क्षेत्रों में भी 1.14 करोड़ से अधिक पक्के मकानों की स्वीकृति प्रदान की जा चुकी है। ग्रामीण एवं शहरी इलाकों में अभी तक कुल मिलाकर 4 करोड़ से अधिक पक्के मकानों की स्वीकृति प्रदान की जा चुकी है। 1 फरवरी 2024 को वित्त वर्ष 2024–25 के लिए प्रस्तुत किए गए केंद्र सरकार के बजट में यह घोषणा भी की गई है कि प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत अगले 5 वर्षों में 2 करोड़ अतिरिक्त नए मकान बनाए जाएंगे ताकि देश के प्रत्येक परिवार के पास अपनी छत उपलब्ध हो सके।

वर्तमान में रियल एस्टेट बाजार भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 7 प्रतिशत का योगदान करता है एवं इस क्षेत्र में 5 करोड़ नागरिकों को रोजगार उपलब्ध हो रहा है। रियल एस्टेट क्षेत्र के आगे बढ़ने से विनिर्माण क्षेत्र से जुड़े अन्य कई उद्योगों को भी बढ़ावा मिलता है। जैसे सीमेंट उद्योग, स्टील उद्योग, ग्लास उद्योग, आदि। एक अनुमान के अनुसार वर्ष 2047 तक रियल एस्टेट बाजार का भारत के सकल घरेलू उत्पाद में योगदान 15 प्रतिशत तक पहुंच सकता है।

भारत में वर्ष 2022 में 3.27 लाख करोड़ रुपये की कीमत के मकान बेचे गए थे एवं वर्ष 2023 में 4.5 लाख करोड़ रुपये की कीमत के मकान बेचे गए। इस प्रकार वर्ष 2023 में इस क्षेत्र में 38 प्रतिशत की वृद्धि दर हासिल की गई है। इस क्षेत्र में मांग तेज बनी हुई है। भारत में रिहायशी मकानों की दृष्टि से सबसे बड़े 7 बाजार हैं - मुंबई, दिल्ली एनसीआर, बेंगलुरु, हैदराबाद, चेन्नई, कोलकाता, एवं पुणे। यह भारत के सबसे बड़े महानगर भी माने जाते हैं।

भारत में रिहायशी मकानों के बिक्री में इतनी अधिक वृद्धि दर इसलिए दर्ज हो रही है, क्योंकि भारत में आर्थिक विकास ने तेज गति पकड़ ली है। गरीब वर्ग, मध्यम वर्ग बन रहा है तो मध्यम वर्ग अमीर वर्ग। इसलिए महंगे-महंगे फ्लैट्स की मांग तेजी से बढ़ रही है। दूसरे, भारतीय रिजर्व बैंक ने भी ब्याज दरों को पिछले लम्बे समय से स्थिर रखा हुआ है। साथ ही, भारत में मुद्रास्फीति की दर भी अब घटने लगी है। भारत के मध्यम वर्ग की आय बढ़ी है और वे रियल एस्टेट में अपना निवेश बढ़ा रहे हैं। केंद्र सरकार भी नागरिकों को इस क्षेत्र में निवेश के लिए प्रोत्साहन दे रही है। आयकर की दरें कम की गई हैं। नए मकान खरीदने वालों को केंद्र सरकार की ओर से सब्सिडी दी जा रही है। "स्कीम फॉर अफोर्डेबल हाउस" लागू की गई है। परंतु, भारत में केवल अफोर्डेबल मकान ही नहीं खरीदे जा रहे हैं बल्कि अब नागरिक सर्वसुविधा युक्त महंगे मकानों में भी निवेश कर रहे हैं। किसी मकान की कीमत 1.5 करोड़ रुपये से अधिक होने पर उसे सर्व सुविधा युक्त मकान की श्रेणी में गिना जाता है एवं मुंबई में 2.5 करोड़ रुपये से अधिक की कीमत वाले को सर्व सुविधा युक्त श्रेणी के मकान में गिना जाता है। भारत में वर्ष 2023 में सर्वसुविधा युक्त मकानों की बिक्री 130 प्रतिशत बढ़ गई हैं। भारत में वर्ष 2022 में 3000 सर्वसुविधा युक्त मकानों की बिक्री हुई थी जबकि वर्ष 2023 में 6900 सर्वसुविधा युक्त मकानों की बिक्री हुई है।

प्रधानमंत्री आवास योजना इस उद्देश्य के साथ प्रारम्भ की गई थी कि गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाले प्रत्येक परिवार को अपना घर उपलब्ध कराया जा सके। इस योजना के अंतर्गत केंद्र सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में मार्च 2024 तक बुनियादी सुविधाओं से युक्त 2.95 करोड़ पक्के मकान बनाने का लक्ष्य तय किया है।

जिन रिहायशी मकानों की कीमत 40 करोड़ रुपये से अधिक होती है उन्हें अल्ट्रा सर्वसुविधा सम्पन्न रिहायशी मकान की श्रेणी में गिना जाता है। वर्ष 2023 में इन मकानों की बिक्री 200 प्रतिशत बढ़ गई है। देश के 7 महानगरों में लगभग 600 अल्ट्रा सर्वसुविधा सम्पन्न मकान भारत में बिके हैं। यह दर्शाता है कि भारत में अति समृद्ध नागरिकों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। भारत में करोड़पति (मिलेनियर) नागरिकों की जनसंख्या 69 प्रतिशत बढ़ गई है। अल्ट्रा हाई नेटवर्थ (3 करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक की आय) नागरिकों की संख्या भी तेजी से बढ़ रही है। एक अनुमान के अनुसार भारत में अगले तीन वर्षों में अल्ट्रा हाई नेट वर्थ नागरिकों की संख्या 19000 होने जा रही है। इस श्रेणी के नागरिक अल्ट्रा सर्वसुविधा सम्पन्न मकान चाह रहे हैं। इसी प्रकार कार्यालय के लिए स्थान, मॉडल के लिए स्थान, ई-कॉमर्स कंपनियों को अपना स्टॉक रखने के लिए बहुत बड़े आकर के गोडाउन की आवश्यकता भी भारत में अब लगातार बढ़ रही है। इस तरह के निर्माण में विदेशी निवेशक भी अपना निवेश बढ़ा रहे हैं। वर्ष 2023 के प्रथम 6 माह में विदेशी निवेशकों ने 400 करोड़ अमेरिकी डॉलर का निजी निवेश भारत में किया है। इसमें से आधा यानी 200 करोड़ अमेरिकी डॉलर रियल एस्टेट के क्षेत्र में किया गया है। विदेशी निवेशक अब चीन में अपना निवेश घटाते हुए भारत में निवेश बढ़ा रहे हैं। भारत में विदेशी निवेशकों को तेजी से विकास करती अर्थव्यवस्था मिल रही है, युवाओं की अधिक संख्या के चलते मांग अधिक मिलती है एवं स्थिर केंद्र सरकार के चलते आर्थिक सुधार कार्यक्रमों को लगातार आगे बढ़ाया जा रहा है। ■

संस्कृति और राष्ट्र जागरण की वाहक है हिन्दी

राम जी तिवारी

राष्ट्र निर्माण और जागरण में हिन्दी की भूमिका ऑक्सीजन की तरह रही है। समय-समय पर हिन्दी अपने साहित्य और कवियों के जरिये एकात्मता एवं राष्ट्र उन्नति की भूमिका में अनुकरणीय और नमनीय रही है।

देश की आत्मा है हिन्दी। भारत की पहचान है हिन्दी। हिन्दी केवल विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम ही नहीं है, बल्कि यह विचारों की जननी के रूप में मनुष्य के आचरण, भाव जगत, विचारधारा, संस्कार, संस्कृति, साहित्य, जागरण और राष्ट्रीय आंदोलन के वाहक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है। इसलिए हिन्दी अपनी व्यापकता और सर्वग्राह्यता के चलते ही राष्ट्र जागरण की प्रणेता रही है। भाषा और साहित्य का इतिहास इस बात का साक्षी रहा है कि जब भी राष्ट्र को एकत्व की जरूरत पड़ी है, उसमें हिन्दी प्रथम पंक्ति में खड़ी मिली है। चाहे बात 16वीं-17वीं शताब्दी में मुगल आक्रांताओं के क्रूर शासन के दौरान आमजन के मनोबल को सकारात्मक बनाये रखने की बात हो या बाद में अंग्रेजों के समय परतंत्रता की बेड़ियों को तोड़ने के लिए। हर परिस्थिति में हिन्दी और हिन्दी कवियों का राष्ट्र जागरण में अद्वितीय योगदान है। इसीलिए तो हिन्दी भारत की स्वयं सिद्ध राष्ट्रभाषा है, भले ही उसे आधिकारिक दर्जा ना हासिल हो। हालांकि महात्मा गांधी, सुभाष चंद्र बोस, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जैसे अनेक महापुरुषों ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए आवाज उठाई थी। देश में हिन्दी भाषा बोलने वालों का प्रतिशत करीब 65 से भी अधिक है, क्योंकि हर दौर में हिन्दी ने कई भाषाओं और बोलियों को आत्मसात किया है। एक प्रकार से हिन्दी बहुभाषी गुलदस्ते को एक सूत्र में करने के लिए सबसे समृद्ध और सशक्त भाषा है। इसलिए अनेक विशेषताओं के चलते भारतेंदु हरिश्चंद्र ने लिखा है-

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल,
बिनु निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।
अंग्रेजी पढ़ि के जदपि, सब गुन होत प्रवीन,
पै निज भाषा-ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन।

हिन्दी भाषा की एक विशेषता यह है कि हमारे देश में रहने वाले लोग चाहें उनकी मातृभाषा या बोली कुछ भी हो कमोबेश हिन्दी से उनका परिचय रहता ही है। विश्व इतिहास को देखने पर एक तथ्य स्पष्ट है कि बिना किसी राष्ट्रभाषा के समाज और राष्ट्र जागरण का कार्य संभव ही नहीं था। भाषा और साहित्य ने भारत में ही नहीं, बल्कि विश्व के कई देशों में स्वतंत्रता और राष्ट्र जागरण की भावना को गति और दिशा दी है। इसकी गवाही अमेरिकी क्रांति, फ्रांस की क्रांति और रूसी क्रांति ने दी है। सभी क्रांतियों और स्वतंत्रता आंदोलनों, राष्ट्र जागरण और एकीकरण में वहां के साहित्य और कवियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

वहीं भारत में हिन्दी लेखकों एवं कवियों में भारतेंदु हरिश्चंद, मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह दिनकर, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुभद्रा कुमारी चौहान, सुमित्रानंदन पंत, माखनलाल चतुर्वेदी, हजारी प्रसाद द्विवेदी आदि ने साहित्यिक अनुष्ठान के द्वारा देश में राष्ट्रीय चेतना की अलख जगायी। सभी ने राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत रचनाओं के जरिये निराश मन में उत्साह भरा। जिनमें कुछ कवियों के रचनाकर्म प्रमुख हैं।

मैथिली शरण गुप्त : राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने अपनी हिन्दी कविता से जन-जन के मन को उद्वेलित किया। उनकी रचना 'भारत भारती' ने राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान राष्ट्र को जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। मैथिलीशरण गुप्त ने अपने काव्य के माध्यम से इतिहास और पुराण की कथाओं को आधुनिक संदर्भ में वर्णित कर स्व की अनुभूति करायी। उन्होंने अपनी लेखनी में राष्ट्र, संस्कृति, प्राचीन इतिहास को प्रमुखता देकर आत्मविश्वास का स्वर दिया। मैथिलीशरण गुप्त का राष्ट्र प्रेम उनकी कविताओं में प्रदर्शित होता है। उनकी कविताओं में देश के गौरव, सौंदर्य का सुन्दर और समन्वित वर्णन है। वे अपनी रचनाओं से देश के युवाओं को राष्ट्रीय आंदोलन के लिए प्रेरित करते हैं। साकेत, यशोधरा, द्वापर सिद्धराज, पंचवटी, जयद्रथ वध और विष्णुप्रिया उनकी प्रमुख रचनाएं हैं। आमजन में उत्साह जगाती ये कविता-

नर हो, न निराश करो मन को
कुछ काम करो, कुछ काम करो
जग में रहकर कुछ नाम करो
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो
समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो
कुछ तो उपयुक्त करो तन को
नर हो, न निराश करो मन को।

इसी तरह मातृभूमि की महिमा को वर्णित करती यह कविता-

नीलांबर परिधान हरित पट पर सुंदर है,
सूर्य-चंद्र युग मुकुट मेखला रत्नाकर है।
नदियां प्रेम-प्रवाह फूल तारे मंडन हैं,
बंदी जन खग-वृंद शेष फन सिंहासन हैं!
करते अभिषेक पयोद हैं बलिहारी इस वेष की,
है मातृभूमि! तू सत्य ही सगुण मूर्ति सर्वेश की।।

सुभद्रा कुमारी चौहान : हिन्दी की प्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान न केवल स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ी रहीं, बल्कि अपनी कविताओं में राष्ट्रीय स्वर को प्रमुखता से उभारा। उन्हीं में से एक है - 'झांसी की रानी' शीर्षक वाली कविता। जिसका कुछ अंश लगभग देशवासियों को कंठस्थ है-

आजादी के बाद भी जब-जब देश को हिन्दी और सनातन संस्कृति को सम्मान देने वाला नेतृत्व मिला है, तब-तब देश उन्नति के पथ पर कुलांचे भरा है। वर्तमान में इस तथ्य पर भी यह धारणा खरी उतरी है।

सुभद्रा कुमारी चौहान

वीर शिवाजी की गाथायें उसको याद जबानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।

इसी तरह 'वीरो का कैसा हो वसंत' उनकी एक अन्य चर्चित कविता है। एक नहीं अनेक रचनाओं में संस्कृति और राष्ट्र को केंद्र में रखकर सुभद्रा कुमारी चौहान राष्ट्रीय चेतना की एक सजग कवयित्री रही हैं।

वीरों का कैसा हो वसंत?
आ रही हिमाचल से पुकार,
है उदधि गरजता बार-बार,
प्राची, पश्चिम, भू, नभ अपार,
सब पूछ रहे हैं दिग्-दिगंत,
वीरों का कैसा हो वसंत?

रामधारी सिंह दिनकर : रामधारी सिंह दिनकर की पहचान राष्ट्रीय धारा और आधुनिक युग के श्रेष्ठ वीर रस के कवि के रूप में है। दिनकर जी की कविताओं में उन सभी पक्षों की अभिव्यक्ति हुई है, जिससे नैराश्य जीवन में ऊर्जा का प्रवाह हो। इस क्रम में काव्य उर्वशी काफी चर्चित है। अन्य रचनाएं जो जागरण में सहायक हुईं उनमें कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, संस्कृत के चार अध्याय प्रमुख हैं।

मेरे नगपति! मेरे विशाल!
साकार, दिव्य, गौरव विराट्,
पौरुष के पुंजीभूत ज्वाल!
मेरी जननी के हिम-किरीट!
मेरे भारत के दिव्य भाल!
मेरे नगपति! मेरे विशाल!

इसी क्रम में राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन भी आजीवन हिन्दी को आजादी के लिए सबसे सशक्त माध्यम मानते थे। वह हिन्दी में भारत की मिट्टी की सुगंध महसूस करते थे। इस तरह हिन्दी और उसके कवि स्वतंत्रता आंदोलन एवं राष्ट्र जागरण के अभिन्न अंग रहे हैं। हिन्दी भाषा और उसके कवियों ने आजादी के पहले और बाद में भी सबसे आगे बढ़कर सूत्रधार की भूमिका निभाई है। राष्ट्र जागरण में सक्रिय हिन्दी ने नवनिर्माण के दायित्व की जिम्मेदारी अपने कंधों पर ली थी, तभी तो महात्मा गांधी, सरदार वल्लभ भाई पटेल, सुभाष चंद्र बोस, दीन दयाल उपाध्याय, श्यामा प्रसाद मुखर्जी आदि हिन्दी को अखिल भारतीय स्वरूप प्रदान के लिए आजीवन प्रतिबद्ध रहे।

आजादी के बाद भी जब-जब देश को हिन्दी और सनातन संस्कृति को सम्मान देने वाला नेतृत्व मिला है, तब-तब देश उन्नति के पथ पर कुलांचे भरा है। वर्तमान में भी इस तथ्य पर भी यह धारणा खरी उतरी है। देश की राजनीतिक, सांस्कृतिक एकता को बढ़ाने के साथ-साथ सदियों से पारंपरिक ज्ञान को सहेजकर नई पीढ़ी को सौंपने का कार्य हिन्दी ने गजब का किया है। और आज भी हिन्दी सनातन संस्कृति के साथ कदमताल कर बाजार का भी सेतु बनकर यह सिद्ध कर रही है। ■

पर्यावरण में रचनात्मक भागीदारी जरूरी

डॉ. आशीष कुमार
इंटरनेशनल स्कूल ऑफ मीडिया एंड एंटरटेनमेंट स्टडीज, न्यूज24

इकोनॉमी सेंट्रिक दुनिया में पर्यावरण का महत्व जितनी तेजी से बढ़ रहा है, मीडिया में पर्यावरण का कवरेज उतनी ही तेजी से कम होता जा रहा है। सामान्य दिनों में पर्यावरण के मुद्दे क्यों अहम नहीं होते हैं? पर्यावरण के प्रति मीडिया की उदासीनता को लेकर अब यह सारे सवाल उसके अंदर और बाहर दोनों ही जगहों से उठ रहे हैं। एक रिपोर्ट के मुताबिक भारतीय मीडिया में पर्यावरण की खबरों को राजनीति, अपराध, खेल व व्यवसाय की खबरों के मुकाबले कम तरजीह दी जाती है। पर्यावरण की खबरों को कुल खबरों के अनुपात में आधी फीसदी से भी कम हिस्सेदारी मिल पाती है। इस मामले में दुनिया के बाकी हिस्सों की तस्वीर भी कोई अलग नहीं। एक स्टडी के अनुसार अमेरिकी टीवी चैनलों पर पर्यावरण के मुद्दे लगातार सिकुड़ते जा रहे हैं। स्टडी में सबसे ज्यादा चौंकाने वाला पहलू यह था कि 85 फीसदी अमेरिकी लोग टीवी या अखबारों में पर्यावरण पर मौजूदा कवरेज के मुकाबले अधिक व गंभीर कवरेज चाहते थे।

आमतौर पर मुख्यधारा मीडिया का एक बड़ा हिस्सा सामान्य दिनों में पर्यावरण को लेकर हल्का-फुल्का नजरिया ही पेश करता है। पर्यावरण पत्रकारिता के नाम टीवी में केवल स्पॉट रिपोर्टिंग ही देखने को मिलती है। सुनामी, भूकंप, प्राकृतिक आपदाएं ही उन्हें कवरेज के लिए मजबूर कर पाती हैं। उनके लिए केवल ग्राउंड जीरो से रिपोर्टिंग का ही महत्व है, जिसमें सनसनी हो। इन प्राकृतिक आपदाओं की खबरों को भी तथ्यों और गंभीरता के बजाए डरावने अंदाज में पेश किया जाता है। खबरों को देखकर लगने लगता है कि दुनिया आज खत्म हुई या कल।

पर्यावरण की रिपोर्टिंग विज्ञान की रिपोर्टिंग से अलग होती है। जब पर्यावरण के मसले पर बात होती है, तो इसके साथ आर्थिक, राजनीतिक व सामाजिक पहलू भी जुड़े होते हैं। इसलिए पर्यावरण पर बात करते समय मीडिया के पास एक बड़ा दायरा होता है। पर्यावरण पत्रकारिता के प्रति उदासीन रवैया के पीछे मीडिया का रेवेन्यू मॉडल भी कम जिम्मेदार नहीं है। यही कारण है कि मुख्यधारा मीडिया से ज्यादा वैकल्पिक पत्रिकाओं, ब्लॉग, वेबसाइट व गैर सरकारी संगठनों के पर्चों में पर्यावरण की चर्चा अधिक दिखायी देती है। इन व्यक्तिगत स्तंभों के सामने मुख्यधारा मीडिया की तरह कोई समझौता करने की मजबूरियां नहीं होती हैं। इसका उन्हें श्रेय दिया जाना चाहिए, जिसकी बदौलत ही पर्यावरण का मसला आम लोगों में एक विचारधारा के रूप में दाखिल हो पाया है।

विविधताओं से भरे भारत देश के प्रत्येक हिस्से के लिए विकास का समान मॉडल लागू नहीं किया जा सकता है। पहाड़ी, रेगिस्तानी, मैदानी, समुद्र तटीय इलाकों की जरूरतें, प्राकृतिक ढांचा व सांस्कृतिक बनावट-बुनावटें अलग हैं। हिमालय, जम्मू-कश्मीर, पूर्वोत्तर की संरचना शेष भारत से अलग है। पर्यावरण के लिहाज से हिमालय के लिए ग्लेशियर का मुद्दा अहम है, तो उत्तराखंड के लिए चीड़ के पेड़ों का अनियंत्रित विस्तार। पूर्वोत्तर के लिए डिफोरेस्टेशन का मुद्दा भी मायने रखता है। इन सभी मसलों पर पर्यावरण से संबंधित असरदार कवरेज तभी संभव है जब संपादक

से लेकर रिपोर्टर तक इसमें रुचि दिखाएं, जब पर्यावरण में हो रही हलचल संपादकों के दिलों में भी हो।

मीडिया में खबरों के मामले में निर्णय लेने वाले पदों में पर्यावरण से संबंधित कोई पद नहीं है, अपवाद के तौर पर विज्ञान संपादक का पद तो मिल भी सकता है, लेकिन पर्यावरण संपादक जैसा कोई पद नहीं है। पर्यावरण की खोजी पत्रकारिता (इनवेस्टिगेटिव रिपोर्टिंग) के लिए समय की जरूरत होती है। ऐसे में संपादकीय विभाग द्वारा सामान्यतः किसी पत्रकार को इतनी छूट नहीं दी जाती है कि वह पूरा समय लेकर मामले की तह तक जा सके। इसलिए पर्यावरण की रिपोर्टिंग केवल स्पॉट रिपोर्टिंग तक ही सिमट कर रह जाती है। साथ ही, संपादकीय विभागों में मानसिक स्तर पर यह आम राय होती है कि सामान्य दिनों में पर्यावरण की खबरें क्राइम व पॉलिटिकल खबरों की तरह पाठकों व दर्शकों को अपील नहीं कर पाती हैं।

मुख्यधारा मीडिया में पर्यावरण पत्रकारिता के लिए विशेषज्ञों की कमी है। पर्यावरण पत्रकारिता को पूरी तरह से समर्पित पत्रकार गिने-चुने ही हैं। सामान्यतः किसी भी मीडिया हाउस में विज्ञान या पर्यावरण के मुद्दों पर अपने पत्रकारों को ट्रेनिंग देने की व्यवस्था भी नहीं है। आम धारणा बनाने में संचार के साधनों के बड़ी भूमिका रहती है। जीवन को सुविधाओं से भरपूर व विलासितापूर्ण बनाने में भी संचार माध्यमों ने काफी हद तक प्रेरित किया है। विलासिता में इस्तेमाल होने वाले अधिकांश साधनों से पर्यावरण के लिए खतरा बढ़ जाता है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि विकास के हर कार्यक्रम के दौरान पर्यावरण के स्रोतों और प्रकृति पर पड़ने वाले विपरीत प्रभावों का असर हर मनुष्य पर पड़ता है, चाहे वह कोई आम आदमी हो या कोई व्यक्ति विशेष। भारत के संदर्भ में यह दुखद पहलू है कि संचार विकास और पर्यावरण संपोषणीयता के सूचकांक में तुलनात्मक रूप से अपेक्षित विकास नहीं हो पाया है। भारत सरकार के पर्यावरण और वन मंत्रालय द्वारा जारी प्रत्येक 'पर्यावरण की स्थिति रिपोर्ट' में देश के सामने पांच प्रमुख चुनौतियों की चर्चा की जाती है, जिसमें जलवायु परिवर्तन, खाद्य सुरक्षा, जल संरक्षण, ऊर्जा सुरक्षा और शहरीकरण प्रबंधन शामिल हैं। चिंता जाहिर करने वाली इन रिपोर्टों के बावजूद मीडिया में पर्यावरण को लेकर कोई संजीदा चर्चा देखने को क्यों नहीं मिलती है? पर्यावरण के लिए जो भी आंदोलन सफल हुए हैं वह सब मीडिया की बजाए जन भागीदारी से हुए। चिपको आंदोलन व अन्य दर्जनों आंदोलनों को सामूहिक रूप से पर्यावरणीय आंदोलनों की संज्ञा दी गई। ये आंदोलन वनों की अंधाधुंध कटाई, नदियों को बचाने, प्राकृतिक जलाशयों के सूखने आदि के लिए किए गए। यह सभी आंदोलन स्वतः जन भागीदारी से पनपे।

मुख्यधारा मीडिया में पर्यावरण पत्रकारिता के लिए विशेषज्ञों की कमी है। पर्यावरण पत्रकारिता को पूरी तरह से समर्पित पत्रकार गिने-चुने ही हैं। सामान्यतः किसी भी मीडिया हाउस में विज्ञान या पर्यावरण के मुद्दों पर अपने पत्रकारों को ट्रेनिंग देने की व्यवस्था भी नहीं है।

पश्चिमी देशों में पर्यावरणीय आंदोलन का उदय औद्योगीकरण के कारण हुआ है। वहां औद्योगीकरण के लिए लोगों के अधिकार नहीं छीने जा रहे थे, बल्कि विशुद्ध पर्यावरण के लिए आंदोलन किए गए। भारत के मामले में पर्यावरणीय आंदोलन के कारण दूसरे रहे। यहां जीवन प्रकृति की गोद में बसता है। लेकिन जब मीडिया के नजरिए से बात करते हैं, तो एक बात साफ हो जाती है, मीडिया के लिए पर्यावरण के लिए वही संघर्ष वास्तविक संघर्ष है जो राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण दिवसों के समारोह में दिखाई देता है। हालांकि, इन तमाम पहलुओं के बावजूद भी यही कहा जाएगा कि मीडिया का दायरा बढ़ने के साथ लोगों में पर्यावरण की प्रति जागरूकता बढ़ी है। इसकी वजह से ही पर्यावरण का विषय अभिजात्य वर्ग से निकलकर आम लोगों तक पहुंचा पाया है। मीडिया की सक्रियता के कारण ही भारत के समुद्री तटों पर आए 'फेलिन' व 'हुदहुद' जैसे तूफानों से होने वाली संभावित भारी जान-माल की हानि से बचा जा सका, लेकिन इस सबके बावजूद पर्यावरण के प्रति मीडिया की वर्तमान भूमिका से संतुष्ट नहीं हुआ जा सकता है। मीडिया के द्वारा पर्यावरण के मुद्दे को निरंतरता में देखे जाने की जरूरत है, जिससे विकास और पर्यावरण के आपसी समन्वय की नए सिरे से पड़ताल हो सके। बांध, पानी, नदी व समाज को लेकर एक बड़े फलक पर बात करने की आवश्यकता है।

सामाजिक संगठन की सक्रिय भागीदारी : भारत सहित पूरे विश्व में पर्यावरण को लेकर चिंताएं लगातार बढ़ती जा रही हैं। बढ़ते प्रदूषण के कारण पर्यावरण बचाने को लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी कई बार चेतावनी जारी की जा चुकी हैं, लेकिन नतीजा अभी तक ढाक के तीन पात वाला ही रहा है। ऐसे में अब विशेषकर भारत में कई सामाजिक संगठन और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर्यावरण बचाने को लेकर आगे आये हैं। इस विषय पर संघ की गंभीरता को इससे भी समझा जा सकता है कि इसके लिए अलग से एक विभाग भी संघ ने बना दिया है।

पंच तत्वों को समझे बिना पर्यावरण को नहीं समझा जा सकता है। ये पंच तत्व जिनमें आकाश, वायु, अग्नि, जल और भूमि हैं। संघ का मानना है कि इन पंचतत्वों में पैदा हुए असंतुलन से काफी विषम परिस्थितियां संसार के सामने आई हैं, जिनके फलस्वरूप पृथ्वी का संतुलन बिगड़ा है इसलिए इन सभी समस्याओं का भारतीय चिंतन की दृष्टि से आज के समय के हिसाब से समाधान ढूंढने की चुनौती है। जन जागरूकता और जन भागीदारी से ही पर्यावरण को बचाया जा रहा है। संघ के कार्यकर्ताओं द्वारा लाखों वृक्षों का रोपण और उनके देखभाल की जिम्मेदारी प्रत्येक वर्ष की जा रही है। ■

अयोध्या में वही त्रेता युग

अशोक कुमार सिन्हा
सचिव, विश्व संवाद केन्द्र, अवध

त्रेता युग का वही दृश्य कलिकाल में पुनः पौष शुक्ल द्वादसी, विक्रमी संवत् 2080, सोमवार, 22 जनवरी को उपास्थित हुआ अयोध्या में रामलला प्राण प्रतिष्ठा समारोह के आयोजन पर। इस अवसर पर भी भौतिक भवनों से लेकर मानव मानस के द्वार भी ध्वजाओं और बन्दनवार से सज गये। रामोत्सव - लोकोत्सव एकाकार हो गये। प्राण प्रतिष्ठा प्रक्रिया वैश्विक पर्व का स्वरूप ले चुकी थी। सरयू की लहरें नृत्य कर रहीं थीं। हनुमान गढ़ी, कनक भवन और पूरे विश्व में हिन्दू निवास जैसे स्वर्णिम आभा से प्रमुदित थे।

भगवान विष्णु ने त्रेतायुग में अयोध्या में जब राम के रूप में अवतार लिया था तब अयोध्या की धरती धन्य हो गई थी। इस धरती की पुण्यता, भव्यता और उल्लास तब भी कितना भव्य रहा होगा, जब चौदह वर्ष का बनवास बिता कर प्रभु राम, जानकी और लक्ष्मण ने अयोध्या की भूमि पर पुनः अपने चरणों से इस धरती को धन्य किया होगा। अयोध्या वासियों ने इस अवसर पर भव्य दीपावली मनाई थी। नर-नारी- बाल, पशु, पक्षी और यहां का कण-कण पुलकित, मुदित और हर्षित था। यह वर्णन हमें प्राचीन ग्रन्थों रामायण और रामचरितमानस में मिलता है। जनमानस, संत, संन्यासी पुलकित और प्रफुल्लित थे। दुंदभि के साथ मंगल ध्वनि के मध्य आकाश से पुष्प वर्षा भी हो रही थी। दिग्विजय का शंखनाद हो रहा था। दरवाजों पर बन्दनवार सजे थे और चौक पर चंदन से रंगोली उकेरी गई थी। अयोध्या में रामनाम की गूंज थी। यह जानकारी मनोहारी रूप में हमारे सनातन सद्ग्रन्थों में वर्णित है। हम त्रेतायुग के उस परमानन्द की अनुभूति कर अपने जीवन को धन्य मनाते हैं।

त्रेता युग का वही दृश्य कलिकाल में पुनः पौष शुक्ल द्वादसी, विक्रमी संवत् 2080, सोमवार, 22 जनवरी 2024 को उपस्थित हुआ श्री राम जन्म भूमि, अयोध्या में रामलला प्राण प्रतिष्ठा समारोह के आयोजन पर। नक्षत्र मृगशीर्ष, मुहूर्त अभिजीत की शुभ घड़ी 12.29.08 से 12.3.32 के मध्य प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर भी भौतिक भवनों से लेकर मानव मानस के द्वार भी ध्वजाओं और बन्दनवार से सज गये। रामोत्सव - लोकोत्सव एकाकार हो गये। प्राण प्रतिष्ठा प्रक्रिया वैश्विक पर्व का स्वरूप ले चुकी थी। जन आकाक्षाएं मंगल ध्वनि और भजन कीर्तन से अपने मुदित मन को अभिसिंचित कर रहा था। सरयू की लहरें नृत्य कर रहीं थीं। हनुमान गढ़ी, कनक भवन और पूरे विश्व में हिन्दू निवास जैसे स्वर्णिम आभा से प्रमुदित थे। इस बार अवध में ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व में दीपावली मनाई गई। भारत सहित विश्व के अनेक स्थानों पर श्री रामचन्द्र कृपालु भजमन व मंगल भवन अमंगल हारी के भजन गूंजे। अयोध्या में इन्द्र योग, मेष लग्न के समय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, काशी के आचार्य गणेश्वर शास्त्री उनकी टीम, जब वैदिक मंत्रोचार के मध्य कार्यक्रम सम्पन्न कर रहे थे, तब सम्पूर्ण भारत ही नहीं विश्व में जहां-जहां सनातनी व भारतवंशी थे, सभी राममय होकर रघुनन्दन का अभिनन्दन कर राम का जयघोष कर रहे थे। मंदिर के बाहर उपास्थित भक्तों पर हेलीकॉप्टर से पुष्प वर्षा हो

रही थी। कचन कलश, बन्दनवार, ध्वज और टनों फूल से सुसज्जित नयनाभिराम सजावट पूरा विश्व देख रहा था। भगवान राम, राजा राम नाम की वर्षा हो रही थी। भाव विह्वल अयोध्या भारत की शक्ति की अनुभूति कर रही थी। सम्पूर्ण देश और विदेश में राम नाम भाव की व्यापकता, अद्वितीय सभ्यतागत कार्यक्रमों से ओत प्रोत था। हर भारतीय की आंखें भावुक थीं, आस्था का समुद्र उमड़ा था। अयोध्या में सर्व पंथों के आचार्य, प्रमुख संत उपस्थित थे। क्या नयनाभिराम दृश्य था? विधाता से की गई शपथ पूर्ण हो रही थी। मनोरथ सफल हो रहा था। यह अवसर भगवान विष्णु के सूर्यावतार की पवित्र तिथि भी थी। कौशल्या के राघव का विग्रह जागृत हो रहा था। वर्तमान पीढ़ी अपनी इन्हीं आंखों से ध्येय का दर्शन कर रही थी। आरती के समय मृदगंम् स्वरगंम्, शहनाई, घन्टा, घड़ियाल और पवित्र मंत्रोच्चार हो रहे थे। इसी समय दूरदर्शन सहित सभी टीवी चैनल 22 देशी और 7 विदेशी भाषाओं में कार्यक्रम प्रसारित कर रहे थे। कहीं कोई व्यवधान नहीं, सर्वत्र राममय भाव था। जिस सरयू का वर्णन वेद में है, उसकी लहरें आनन्द की अनुभूति से हिलोरे ले रही थीं। सूर्य भगवान ने भी इस अवसर पर घने कोहरे को छांट कर अपनी आंखें खोली थी, अतः गुनगुनी धूप निकल आई थी। मंदिर के ईशान कोण व आग्नेय कोण में बैठे भारत भर से आये संत, महात्मा अपने-अपने क्षेत्र के प्रसिद्ध नागरिक, कलाकार, खिलाड़ी सहित अनेकों गणमान्य अतिथि व श्री राम जन्म भूमि आन्दोलन में संघर्षरत रहे परिवारजन अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की मर्यादा बढ़ा रहे थे। अनुष्ठान सिद्धि की भावना से ओतप्रोत साधना और तपस्या पूर्ण कर मनसा-वाचा-कर्मणा, तप द्वारा परिशुद्ध हो कर 'तप-तप इति तपश्चर्य' की भावना को व्यक्त कर रहे थे।

यह कार्यक्रम वस्तुतः त्रेतायुग की याद दिला गया। भारत को इसी दिव्य दिन की प्रतीक्षा थी। त्रेतायुग के वैभव की पूरी दुनिया दर्शन कर रही थी। बाल रूप रामलला की प्राण प्रतिष्ठित मूर्ति की भव्यता व सुदर्शन रूप से पूरी दुनिया दर्शन कर परम संतोष का अनुभव कर रही थी। अपने संबोधन में डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि रामलला के साथ भारत का स्व लौट आया है। नया भारत खड़ा हो रहा है। अयोध्या उस नगरी का नाम है, जहां द्वन्द नहीं है। आगे हमें रामराज्य का संकल्प पूरा करना है। बिना अहंकार के धर्म के चार मूल सत्य, करुणा, अहिंसा व तपस्या के बल पर मंदिर पूरा होते-होते विश्व गुरु बनाने का ध्येय पूरा करना है। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने कहा कि हमारे सभी के राम आ गये हैं। गर्भगृह में ईश्वरीय चेतना का साक्षी बन कर मैं अनुभव कर रहा हूं कि आज का दिन नये कालचक्र का उद्गम सिद्ध होगा। मन्दिर न्यायबद्ध हो कर बना है, यही कारण है कि सागर से सरयू तक की यात्रा में हमें भारत के एकत्व की अनुभूति हुई। राम आग नहीं ऊर्जा हैं। विवाद नहीं समाधान हैं। वर्तमान नहीं अनन्त काल हैं। आज का रामोत्सव सर्वव्यापकता और परम्पराओं का उत्सव है। हमें अगले एक हजार वर्षों की नींव रखनी है। हमें राम से राष्ट्र तक, देव से देश तक चेतना का विस्तार करना है। इस अवसर पर उन्होंने शबरी, निषादराज, जटायु और गिलहरी का स्मरण करते हुये कहा कि आने वाला समय भारत के अभ्युदय का है। इस दौरान श्रमबीरों का सम्मान भी किया। यह दिन विजय नहीं विनय का दिन है- यही नहीं, उन्होंने नव प्रतिष्ठित राम विग्रह के समक्ष साष्टांग दण्डवत भी किया।

अवधपुरी सोहइ एहि भांती ।
प्रभुहि मिलन आई जनु राती ।। ■

भारत को इसी दिव्य दिन की प्रतीक्षा थी। त्रेता युग के वैभव की पूरी दुनिया दर्शन कर रही थी। बाल रूप रामलला की प्राण प्रतिष्ठित मूर्ति की भव्यता व सुदर्शन रूप से संपूर्ण विश्व दर्शन कर परम संतोष का अनुभव कर रहा था।

श्रद्धा निधि समर्पण अद्वितीय आन्दोलन

श्रद्धा निधि समर्पण अभियान देश में सांस्कृतिक एकता और संवेदना के अद्वितीय सेतु के रूप में स्वर्णांकित हो गया। इस अभियान ने पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में पिरो दिया। यह संभव इसलिए हुआ क्योंकि राम सबके हैं।

नरेन्द्र भदौरिया
वरिष्ठ पत्रकार

भारत अपनी सांस्कृतिक विराटता का आभास कर रहा है। किसी विराट राष्ट्र को अपनी अलौकिक संस्कृति के साथ लघुता की मनोदशा में उलझा कर नहीं रखा जा सकता। भारत की अनंत कालीन संस्कृति के देवातीत अतीत की बातें खण्डहर पर बैठे किसी दीन व्यक्ति के उदगार नहीं हैं। धर्मनिष्ठ महत्तम भारत के जनमानस को हीनता के विवर में रुद्ध करने के प्रयत्न सैकड़ों वर्षों तक होते रहे। उस दुर्गति से बाहर आने का उत्साह भारत के सिंहों में दिखायी पड़ रही है। अयोध्या धाम में श्रीराम जन्मभूमि पुण्य स्थल पर भव्य मन्दिर के निर्माण के लिए भारत के 797 जिलों और नगरीय बस्तियों में श्रद्धा समर्पण निधि का अद्वितीय आन्दोलन एक अप्रतिम इतिहास बन गया। इस अभियान में 67 करोड़ से अधिक लोगों से उनकी चौखट पर जाकर सम्पर्क किया। महत्व की बात यह नहीं कि कितना निधि का समर्पण हुआ उल्लेखनीय यह है कि ध्येय सिद्धि के लिए कितना बड़ा समाज उद्यत है।

इस जीवन्त आन्दोलन के उपरान्त सिंहावलोकन आवश्यक है। नवोत्थान की रीति नीति सुनिश्चित करने के आग्रह को दर्शाती दीप शिखा जल उठी है। अयोध्या में श्रीराम जन्म भूमि की बेड़ियों को न्याय के दण्ड ने उधेड़ा तो आधी सहस्त्राब्दि से नैराश्य से निमीलित कोटि-कोटि नेत्र खुल गये। विषाद की गहन निशा ने भोर का घोष सुना तो कई सूर्य एक साथ सनातनियों की मुंडेर पर आ खड़े हुए। सूर्य वंश की परम दीप्त ज्योति श्रीराम की मनुहार करने को भारत भूमि के हर रज कण से समर्पण की अनुगूंज सुनायी पड़ने लगी।

श्रीराम ने अपनी प्राकट्य भूमि/ जन्मभूमि की गुहार को लंका के युद्ध के तत्काल बाद सुना था। तब यह गुहार प्रिय अनुज भरत के साथ सम्पूर्ण अयोध्या की थी। इस बार तो अखिल ब्रह्माण्ड के नायक को अखिल ब्रह्माण्ड गुहारने लगा। तभी तो श्रीराम जन्मभूमि के लिए सभी के हृदय पूर्ण समर्पण के निमित्त आकुल हो उठे। उद्यत भारत के जन-जन ने एक अपूर्व आन्दोलन में भाग लिया। यही तो था निष्ठा के सागर के समर्पण का अद्वितीय उल्लास। जिसका परिणाम सभी ने देखा। ऐसा अविस्मरणीय सामर्थ्य प्रकट हुआ कि जिसने भारत की सनातन संस्कृति के द्रोहियों को झकझोर दिया। ऐसा दिव्य भाव पहले कभी किसी इतिहासकार ने देखा-सुना नहीं था। ऐसे सामर्थ्य के प्राकट्य की पृष्ठभूमि में सामाजिक संगठनों का अथक परिश्रम काम आया उनकी सुधि लिये बिना बात पूरी नहीं हो सकती।

भारत के हिन्दू समाज को काल की विपरीत परिस्थितियों ने दुसह्य दंश अनेक बार दिये। अनेक पीढ़ियां क्लान्त होती रहीं। घूमती धरती के शोषक भूखण्डों के आततायी हमारे दिव्य देश भारत में घुस आये। अपने महान पुरखों के ज्ञान की पुस्तकें हम उनसे बचा नहीं सके। इनको चुराकर पाश्चात्य देशों में छिपाने वालों ने बदले में हमें क्या कुछ नहीं कहा। जितने टुकड़ों में चाहा हमारे समाज का

विखण्डन किया। हमारी वेशभूषा, भाषा, सोच, विचारधारा सब बदलती रही। हम आत्मग्लानि से भर गये। पाश्चात्य देशों की थोथी चकाचौंध के हम मानसिक दास हो गये। हमारा आत्मबोध विलीन होता रहा, हम सोचते रह गये कि कृण्वन्तो विश्वमार्यम्, अर्थात सभी को श्रेष्ठ बनाने, सर्वे भवन्तु सुखिनः (सभी को सुखी देखने) का हमारा ध्येय कहां चला गया। हमसे चिल्ला कर कहा जाता रहा कि तुम अविकसित मानव हो। हमारी पीढ़ियों को हमसे छीनकर उन्हें अल्पज्ञों ने अपनी अविकसित भाषा और पापों से भरा इतिहास थमा दिया। भारतीय मान्यताओं को समाज विरोधी, साम्प्रदायिक कहा जाने लगा। अपनी सांस्कृतिक पहिचान के हर चिह्न को उजाड़ डाला। सामाजिक आर्थिक ताने-बाने को नष्ट कर दिया गया। सदियों से एक सूत्र में बंधे समाज के परखच्चे हमारे सामने होते रहे। अपने समाज की मान्यताओं का स्वांग होते देख कर मुदित होने वाले हमी तो थे। अपनी खिल्ली उड़ाने की प्रतिस्पर्धा में हम प्रथम पंक्ति में खड़े दिखायी पड़े, पर हमारे बड़ों ने धीरज का त्याग नहीं किया। सुधी जनों ने संकल्प से सिद्धि के लिए साधना का आश्रय नहीं छोड़ा। शाश्वत ज्ञान धारा की सरस्वती और सिन्धु की जलधारा को मार्ग बदलने पर विवश किया जाता रहा, पर ध्येय निष्ठ साधकों ने अपने चित्त में उन ज्ञान धारा को प्रवाहमान बनाये रखा। समय पलटने लगा। जिस स्थिति- परिस्थिति में लोग सच्चाई से भी मुंह मोड़ लेते थे। कालांतर में उन्हीं सामाजिक संगठनों और तपस्वी सुजनों को देवदूत कहा जाने लगा। यह समय उस सिंह की सुधि दिलाता है जो कभी मांद से बाहर निकल कर किसी शिखर पर खड़े होकर पीछे मुड़कर देखने को उद्यत होता है। वह स्वत्व की अनुभूति करता है। जानने की चेष्टा करता है कि वह कौन था, जो हमारी सीमाओं में आकर बल प्रदर्शन कर रहा था। सिंह के इसी शिखरोत्त अवलोकन को सिंहावलोकन कहते हैं। अयोध्या धाम में श्रीराम का पुनरागमन राष्ट्रावतार की प्रतीति है।

मंदिर निर्माण के निमित्त समर्पण एक आन्दोलन बन गया। आज भारत ने संसार को दिखा दिया कि हिन्दू समाज का सामर्थ्य कितना अद्वितीय है। हिन्दू समाज ने वह क्षमता भी अर्जित कर ली है कि सशक्त विहंग की भांति दूरस्थ आकाश की ऊंचाई से विहंगावलोकन कर पा रहा है। सनातन संस्कृति और हिन्दू समाज के शत्रु सहमें हुए दूर खड़े हैं। अपने समाज की क्षमताओं को परखना उसे बढ़ाते रहना यही संगठन का सूत्र है, तभी तो संस्कृति द्रोही अपने दरबों में सीमित रहने के लिए विवश होंगे। दक्षता हमारे पास है, स्वत्व की रक्षा हम हर रीति से करते जाएंगे। मर्यादाएं हमें पता हैं। हमारी अपेक्षा है कि संस्कृति के विरोधी राष्ट्रावतार की संकल्पना को खुली आंखों से निहारें, द्रोह छोड़ें। पराये अधरों के संकेत देखकर हिन्दुओं के बोलने के दिन बीत गये। संसार को यह बताने के दिन आ चुके हैं कि हमारे ज्ञान को अपरिपक्व कहने की मूढ़ता त्यागनी होगी। पुरानी नींव पर नव निर्माण हमारी विवशता नहीं, अपितु सतत नवीनता का शाश्वत आग्रह है। सनातन संस्कृति संसार के लिए एक प्रखर सामाजिक संस्कार है।

राम भक्तों ने श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के निर्माण के लिए श्रद्धा समर्पण निधि संग्रह को जैसे एक आन्दोलन के रूप में स्वीकार किया, उसी तरह हिन्दू समाज को शैक्षिक, भाषाई और अध्यात्म जगत की दुरूहताओं में सुधार की चुनौती स्वीकारनी होगी।

यह यथार्थ स्वीकार करने में संकोच नहीं है कि राजनीतिक स्वातन्त्र्य का महोत्सव तो हम मनाते आ रहे हैं, पर सांस्कृतिक, आर्थिक और शैक्षिक स्वातन्त्र्य पाने की प्रतीक्षा करानी पड़ी। राजनीतिक स्वातन्त्र्य के बाद भी पाश्चात्य जगत का मुखापेक्षी बने हुए 7 दशक व्यतीत हो गये। अर्थ, शिक्षा, भाषा, साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में पाश्चात्य देशों की नीतियों के अनुकरण की शासकीय वृत्ति ने स्वावलम्बन, आत्मगौरव और स्वत्व के विचार को पनपने नहीं दिया। प्रत्येक क्षेत्र में स्व की अनुभूति अर्थात अपनी संस्कृति के अनुरूप नीतियां गढ़ने के भाव को हृदयंगम करना हमारे तन्त्र ने नहीं सीखा। यह स्वीकार करना पड़ेगा कि समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग नहीं चाहता कि उसकी जमी जमायी शोषण की वृत्ति से उपजी व्यवस्था भंग की जाय। ऐसा करने की सोच भर से शोषक फड़फड़ाने लगते हैं।

भारत में 1947 के पूर्व जैसा था वही तन्त्र अब तक खड़ा है। जो स्वभावतः अधिनायक प्रवृत्ति का है। शिक्षा के अशक्त तन्त्र ने करोड़ों युवाओं को गर्त में धकेल दिया है। वह डिग्री धारक तो हैं, पर वस्तुतः सामर्थ्य हीन अकारथ हैं। परकीय शैक्षिक तंत्र का यही प्रमुख दोष है। इतना कहने भर से दोष मुक्ति नहीं होगी। बहुत बार नीतियों को सुधारने के बाद भी क्रियान्वयन के दोष सुधारे बिना अच्छे परिणाम नहीं मिलते।

राम भक्तों ने श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के निर्माण के लिए श्रद्धा समर्पण निधि संग्रह को जैसे एक आन्दोलन के रूप में स्वीकार किया, उसी तरह हिन्दू समाज को शैक्षिक, भाषाई और अध्यात्म जगत की दुरूहताओं में सुधार की चुनौती स्वीकारनी होगी। अब नये नक्षत्रों का उदय हो रहा है। आकाश में उदित हो रहा नया सूरज प्रतीक्षा नहीं करेगा। संकल्प के साथ साधना करने का परिणाम है कि भारत के कुल 797 जिलों के 06 लाख 28 हजार 261 गांवों में से 05 लाख 37 हजार 019 ग्रामों के साथ ही नगरीय बस्तियों के कुल मिलाकर लगभग 67 करोड़ लोगों से सम्पर्क किया गया। समाज के लोगों ने 2100 करोड़ रुपये से अधिक धन संग्रह के इस अद्वितीय श्रद्धा समर्पण निधि में प्रदान किया। यह धन बड़े धनिकों से लेकर सामान्य जन तक पहुंच बनाकर संगृहीत किया गया। संसार के इतिहास का यह अब तक का सबसे विराट अभियान या कहें समर्पण आन्दोलन बन गया। ऐसा कीर्तिमान किसी और व्यक्ति, सरकार अथवा संगठन के नाम नहीं है। ■

जन-जन की होली

रंगों का त्यौहार होली समरसता का पर्व है। उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक समूचे राष्ट्र में मनायी जाने वाली होली जन-जन की है। मनभावन ऋतु में रंगोत्सव के नाम से ही मन की तरंगे सतरंगी अहसास से सराबोर हो जाती हैं। बचपन की यादें ताजा हो जाती हैं, क्योंकि मीठी गुझिया की तरह भारतीय संस्कृति की मिठास ही कुछ ऐसी है।

विजय कुमार राय
पत्रकार

भारतीय संस्कृति में पर्वों की अविरल श्रृंखला में राष्ट्रीय चरित्र का दिग्दर्शन होता है। इन पर्वों में होली अनुपम है। जाति-वर्ग के समस्त भेदों को समतल करता हुआ होली का आनंदोल्लास जन-जन में सहज ही प्रवाहित होता देखा जा सकता है। तत्व रूप में देखें, तो समूहमन का निर्माण करने वाला यह रंगोत्सव समरस समाज निर्माण के महती उत्तरदायित्व को धारण करने वाला भारत का महापर्व है। जिसकी बुनियाद हमारे महान ऋषियों ने वैदिक युग में डाली थी। भारत में जितने रंग इस महापर्व में हैं, किसी भी दूसरे पर्व-त्यौहार में नहीं। इस मौके पर देश के विभिन्न क्षेत्रों में मनाये जाने वाले इस पर्व के अनूठे राग-रंगों और परंपराओं का समुच्चय काफी दिलचस्प है।

ब्रज की होली : ब्रज धरा की होली के सामने स्वर्ग का आनंद भी फीका लगता है। अनुराग, उल्लास, हास-परिहास से आपूरित मुरलीधर कृष्ण की धरती पर होली का त्यौहार वसंत पंचमी से चैत्र कृष्ण पंचमी तक मनाया जाता है। ब्रज की होली तथा भगवान कृष्ण के मध्य एक अद्वैत संबंध माना जाता है। इसी कारण होली के अवसर पर राधा-कृष्ण संपूर्ण बृज के घर-घर में वंदनीय हैं। इस दौरान मथुरा के द्वारकाधीश मंदिर, जन्मभूमि मंदिर, वृंदावन का बांके बिहारी मंदिर और इस्कॉन आदि मंदिरों में फूलों की होली की छटा देखने वाली होती है। इस होली के पहले लड्डू मार होली खेली जाती है। पुजारी प्रसाद के रूप में श्रद्धालुओं पर लड्डू बरसाते हैं। इसी तरह राधा रानी के गांव बरसाना की लट्ठमार होली की परम्परा भी अति प्राचीन है।

मथुरा के फालैन गांव की रोमांचक होली : मथुरा के फालैन गांव की अनूठी होली के अपने अलग ही कौतुक हैं। यह होली फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा को मनायी जाती है। इस दौरान गांव का पंडा शरीर पर मात्र एक अंगोछा धारण कर होली की धधकती आग में से निकल कर अथवा उसे फलांग कर दर्शकों में रोमांच पैदा कर देता है। होली में से उसके सकुशल निकलने के उपलक्ष्य में खलिहान का पहला अनाज भी उसे अर्पित किया जाता है। फालैन गांव के आस-पास के लोगों का मत है कि सैंकड़ों वर्षों पूर्व भक्त प्रह्लाद के आग से सकुशल बच जाने की घटना को, इस दृश्य के माध्यम से सजीव किया जाता है।

अयोध्या का होलिकोत्सव : वृंदावन व बरसाने की तरह ही भगवान राम की नगरी अयोध्या में होली भी मनमोहक होती है। अयोध्या में होली की शुरुआत रंगभरी एकादशी से होती है। इस दिन सभी साधु महात्मा और अवध वासियों का विशाल जनसमूह निकलता है। यह जत्था पहले हनुमानगढ़ी जाता है तथा वहां हनुमान जी की छड़ी और पवित्र निशान की पूजा वंदना की जाती है फिर सभी उसी प्रांगण में होली खेलते हैं। उसके बाद पवित्र निशान और छड़ी के साथ पंचकोसी परिक्रमा की जाती है। मान्यता है कि तेत्रायुग में वनवास के बाद श्रीराम जब

अयोध्या के राजा बने, तो उनके शासनकाल में मनायी गयी पहली होली में सभी देवी-देवताओं को शामिल होने का निमंत्रण स्वयं हनुमान जी ने दिया था। इसीलिए आज भी अयोध्या की होली हनुमानगढ़ी से शुरू होती है।

काशी में भस्म की होली : काशी की होली का तो कहना ही क्या! इस होली से एक रोचक जनश्रुति जुड़ी है। फाल्गुन मास की रंगभरी एकादशी के दिन बाबा विश्वनाथ देवी पार्वती का गौना कराकर दरबार लौटते हैं। इस दिन बाबा की पालकी निकलती है और लोग उनके साथ रंगों का त्यौहार मनाते हैं। दूसरे दिन बाबा औघड़ रूप में महाश्मशान पर जलती चिताओं के बीच चिता-भस्म की होली खेलते हैं। इसमें लोग डमरुओं की गूंज और "हर हर महादेव" के नारे के साथ एक दूसरे को भस्म लगाते हैं। काशी में होली की यह परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। होली का यह सिलसिला बुढ़वा मंगल तक चलता रहता है।

उत्तराखंड की बैठकी होली : उत्तराखंड के कुमाऊं मंडल में होली की खासियत अबीर-गुलाल के टीकों के साथ शास्त्रीय परम्परा के साथ ''बैठकी होली" और ''खड़ी होली" का गायन है। अपनी इस सांस्कृतिक विशेषता के लिए कुमाऊंनी होली लोक विख्यात है। शाम के समय कुमाऊं के घर-घर में होली की बैठकें होने लगती हैं, जिनमें होली पर आधारित गीत विभिन्न राग-रागिनियों के साथ हारमोनियम और तबले पर गाये जाते हैं।

आनंदपुर साहिब का होला-मोहल्ला सिखों के पवित्र धर्मस्थल श्री आनंदपुर साहिब में होली ''पौरुष के प्रतीक पर्व" के रूप में मनाई जाती है। गुरु गोविंद सिंह जी ने होली के लिए पुल्लिंग शब्द ''होला-मोहल्ला" का प्रयोग किया था। इस ''होला-मोहल्ला" उत्सव का आयोजन होली के अगले दिन किया जाता है। इस अवसर पर घोड़ों पर सवार निहंग हाथ में निशान साहब उठाए तलवारों के करतब दिखा कर साहस व पौरुष और उल्लास का प्रदर्शन करते हैं।

कुल्लू की रघुनाथ पालकी यात्रा : हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिले में होली का त्यौहार एक खास अंदाज में मनाया जाता है। यहां इस पर्व की शुरुआत वसंत पंचमी के दिन से हो जाती है। इस दिन भगवान रघुनाथ जी का विशेष श्रृंगार कर उनकी पालकी को उसी अंदाज में मंदिर से बाहर निकाला जाता है जैसा कि दशहरे के अवसर पर। इस शाही यात्रा के रघुनाथजी के साथ हनुमानजी की प्रतिमा को भी होली का टीका लगाया जाता है। हिमाचल के सुजानपुर क्षेत्र का होली मेला भी पूरे देश में विख्यात है। इस मेले की शुरुआत लगभग 225 वर्ष पहले तब हुई थी जब कांगड़ा के राजा संसारचंद ने सुजानपर को अपनी राजधानी बनाया था। इस मेले में देशभर से आए कलाकार अपनी कला का जादू बिखेरते हैं। इसी तरह हिमाचल के ही कांगड़ा क्षेत्र में प्रसिद्ध श्वेताम्बर जैन मंदिर में श्रद्धालु होली पर भगवान आदिनाथ की विशेष पूजा-अर्चना करते हैं।

बंगाल की ''दोल जात्रा'': बंगाल में होली के एक दिन पूर्व दोल जात्रा निकाली जाती है। इस दिन महिलाएं लाल किनारी वाली पारंपरिक सफेद साड़ी पहन कर शंख बजाते हुए राधा-कृष्ण की पूजा करती हैं और प्रभात फेरी का आयोजन करती हैं। दोल का अर्थ है झूला। झूले पर राधा-कृष्ण की मूर्ति रखकर महिलाएं भक्ति गीत गाती हैं और अबीर एवं रंगों से होली खेलती हैं। शांति निकेतन में प्रातः गुरुदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर की प्रतिमा को नमन के पश्चात अबीर गुलाल के साथ "दोलोत्सव" मनाया जाता है।

गोवा का ''शिमगो उत्सव'' : होली का उत्सव यहां "शिमगो उत्सव" के रूप में मनाया जाता है। गोवा के शिमगा उत्सव की सबसे अनूठी बात पंजिम का वह जनसैलाब है जो होली के दिन निकलता है। समापन स्थल पर साहित्यिक, सांस्कृतिक और पौराणिक विषयों पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं।

मणिपुर का "याओशांग": मणिपुर में होली मूलतः याओशांग के रूप में मनायी जाती है। इससे अभिप्राय उस नन्हीं-सी झोंपड़ी से है, जो पूर्णिमा के दिन सूर्योदय के समय प्रत्येक नगर-ग्राम में नदी अथवा सरोवर के तट पर बनाई जाती है। इसमें चैतन्य महाप्रभु की प्रतिमा स्थापित की जाती है और पूजन के बाद इस झोंपड़ी को होलिका की भांति जला दिया जाता है। फिर इसकी राख को लोग अपने मस्तक पर लगाते हैं।

दक्षिण भारत में ''काम दहनम'' : दक्षिण भारतीय राज्यों में होलिका दहन को "काम दहनम" कहा जाता है। यहां होली पर्व को कामदेव की कहानी से जोड़कर देखा जाता है। तमिलनाडु में कामदेव और उनकी पत्नी रति की कहानी पर आधारित कई लोकगीत गाये जाते हैं। केरल में तमिल भाषी लोग होली को मंगलकुली के रूप में मनाते हैं। मंगल यानी 'हल्दी 'और कुली का अर्थ है स्नान। ■

सुप्रीम कोर्ट के परिसर में आयुष समग्र कल्याण केंद्र

कोरोना काल में आयुर्वेद लोगों के लिए वरदान साबित हुआ, तब से आम जनता से लेकर सरकार सभी इसके प्रति सकारात्मक हैं। इसी क्रम में भारत के प्रधान न्यायाधीश न्यायमूर्ति डीवाई चंद्रचूड़ ने सर्वोच्च न्यायालय के परिसर में 'आयुष समग्र कल्याण केंद्र' का उद्घाटन किया। इस अवसर पर, सर्वोच्च न्यायालय और अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान के बीच आयुष समग्र कल्याण केंद्र की स्थापना, संचालन और विशेषज्ञ सेवाएं प्रदान करने के संबंध में एक समझौता ज्ञापन पर भी हस्ताक्षर हुआ। इस दौरान न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ ने कहा, ''मेरे लिए, यह एक संतोषजनक क्षण है, जब से मैंने सीजेआई का पद संभाला है तब से मैं इस पर काम कर रहा हूं। मैं आयुर्वेद और समग्र जीवन शैली का समर्थक हूं। हमारे पास 2000 से अधिक कर्मचारी हैं और हमें न केवल न्यायाधीशों और उनके परिवारों के लिए बल्कि स्टाफ सदस्यों के लिए भी जीवन जीने का एक समग्र स्वरूप देखना चाहिए। ■

भगवान बुद्ध और उनके दो शिष्यों के पवित्र अवशेष पहुंचे थाईलैंड

भारत-थाईलैंड के बीच मित्रता व स्नेह के बंधन को और अधिक मजबूत करने के लिए दोनों देशों के बीच नित नये आयाम जुड़ते रहते हैं। इसी के तहत भगवान बुद्ध के चार पवित्र पिपरहवा अवशेष सहित उनके दो शिष्यों- सारिपुत्र और अरहाता मौद्गल्यायन के अवशेष 22 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल के साथ 26 दिवसीय प्रदर्शनी के लिए 22 फरवरी को थाईलैंड के बैंकॉक पहुंचा। यह 23 फरवरी को बैंकॉक के सनम लुआंग पवेलियन में तैयार एक भव्य मंडप में स्थापित हुआ। 22 फरवरी को थाईलैंड के धार्मिक कार्य विभाग और राष्ट्रीय संग्रहालय ने थाईलैंड राष्ट्रीय संग्रहालय में पवित्र अवशेषों के लिए एक प्रदर्शनी समझौते पर भी हस्ताक्षर किए। इस प्रदर्शनी समझौते पर हस्ताक्षर 75 वर्षों से चले आ रहे भारत और थाईलैंड के बीच राजनयिक संबंधों में एक और प्रगति है। इस तरह 19 मार्च को थाईलैंड में एक ऐतिहासिक और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध प्रदर्शनी का समापन होगा। ■

श्री कल्कि धाम का शिलान्यास

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उत्तर प्रदेश के संभल में 19 फरवरी को श्री कल्कि धाम मंदिर का शिलान्यास किया। साथ ही प्रधानमंत्री ने श्री कल्कि धाम मंदिर के मॉडल का भी अनावरण किया। इस धाम का निर्माण श्री कल्कि धाम निर्माण ट्रस्ट द्वारा किया जा रहा है, जिसके अध्यक्ष आचार्य प्रमोद कृष्णम हैं। इस अवसर पर पीएम ने 18 साल के इंतजार का जिक्र करते हुए कहा कि ऐसा लगता है कि अभी कई अच्छे काम बाकी हैं, जिन्हें मेरे लिए छोड़ा गया है। उन्होंने कहा कि जनता और संतों के आशीर्वाद से वह अधूरे कार्यों को पूरा करते रहेंगे। प्रधानमंत्री ने मंदिर की वास्तुकला पर प्रकाश डालते हुए विस्तार से बताया कि इस मंदिर में 10 गर्भगृह होंगे, जहां भगवान के सभी 10 अवतार विराजमान होंगे। उन्होंने कहा कि जीवन में कोई भी भगवान की चेतना का अनुभव कर सकता है। हमने भगवान को 'सिंह, वराह और कच्छप के रूप में अनुभव किया है। भगवान की इन स्वरूपों में स्थापना लोगों की भगवान के प्रति मान्यता की समग्र छवि प्रस्तुत करेगी। पीएम नरेन्द्र मोदी ने कहा कि यह कार्यक्रम भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण का एक और अनूठा क्षण है। अयोध्या धाम में श्री राम मंदिर के अभिषेक और हाल ही में अबू धाबी में मंदिर का उद्घाटन हुआ जो कभी कल्पना से परे था वह अब वास्तविकता बन गया है। उन्होंने कहा कि कल्कि काल चक्र में बदलाव के सर्जक हैं और प्रेरणा के स्रोत भी हैं। कल्कि धाम भगवान को समर्पित एक ऐसा स्थान बनने जा रहा है जो अभी तक अवतरित नहीं हुए हैं। ■

1. कामाख्या देवी मंदिर है।

(A) मुक्ति धाम (B) शक्ति पीठ

(C) योग केंद्र (D) अध्ययन केंद्र

2. संत आचार्य विद्यासागर महाराज किस धर्म से थे?

(A) जैन धर्म (B) बौद्ध धर्म

(C) हिन्दू धर्म (D) अन्य

3. किस पुराण में काशी को ब्रह्म रसायन कहा गया है?

(A) मत्स्यपुराण (B) पद्म पुराण

(C) मार्कण्डेय पुराण (D) स्कन्दपुराण

4. ज्योतिर्लिंग की संख्या कितनी है?

(A) 10 (B) 11

(C) 12 (D) 13

5. काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग गंगा के किस ओर स्थित है?

(A) पश्चिमी तट (B) पूर्वी तट

(C) उत्तरी तट (D) दक्षिणी तट

6. होली फाल्गुन मास की किस तिथि को मनायी जाती है।

(A) पंचमी (B) एकादशी

(C) अमावस्या (D) पूर्णिमा

7. तमिल रामायण- रामावतारण के रचयिता हैं।

(A) कंबन (B) तिरुवल्लुवर

(C) माणिक्कवाचकर (D) वैरमुत्तु रामस्वामी

8. वरुणा और असि नदी किस शहर में है?

(A) कानपुर (B) वाराणसी

(C) अयोध्या (D) सुल्तानपुर

9. लट्ठमार होली खेली जाती है।

(A) नासिक में (B) हरिद्वार में

(C) बरसाना में (D) द्वारका में

10. धनुषकोडी स्थल किस भगवान से जुड़ा है?

(A) शंकर भगवान (B) मां सीता

(C) हनुमान जी (D) प्रभु राम

उत्तर

1. (B), 2.(A), 3.(D), 4.(C), 5.(A), 6.(D), 7.(A), 8. (B) , 9. (C), 10. (D)

हर दिन पावन

तिथि	विवरण
1 मार्च, 1924	गोपीमोहन साहा बलिदान दिवस, क्रान्तिवीर
2 मार्च, 1981	केशवराव देशमुख पुण्यतिथि (गुजरात, प्रांत प्रचारक)
3 मार्च, 1939	लाला हरदयाल पुण्यतिथि, स्वतन्त्रता सेनानी
4 मार्च, 1925	तोसिको बोस पुण्यतिथि, क्रान्तिकारी
5 मार्च, 1905	सुशीला दीदी जयंती, स्वाधीनता सेनानी
6 मार्च, 1897	धर्मवीर पण्डित लेखराम बलिदान दिवस
7 मार्च, 1911	सच्चिदानंद हीरानंद वात्सयायन 'अज्ञेय' जयंती
8 मार्च, 1608	संत तुकाराम जयंती (महान विट्ठलभक्त)
9 मार्च, 1994	सरस्वती ताई आप्टे पुण्यतिथि, नारी संगठन को समर्पित
11 मार्च, 1686	छत्रपति सम्भाजी बलिदान दिवस
12 मार्च, 1979	डॉ. भगवानदास माहौर पुण्यतिथि (चंद्रशेखर आजाद के साथी)
13 मार्च, 1918	डॉ. रामेश्वर दयाल पुरंग जयंती (सेवा भावी)
14 मार्च, 1922	बाबू पंढरीराव कृदत्त जयंती (संघ कार्यकर्ता)
15 मार्च, 1959	सुनील उपाध्याय जयंती (अभाविप को समर्पित)
16 मार्च, 1924	सीताराम अग्रवाल जयंती, स्वतंत्रता सेनानी
17 मार्च, 1945	ज्ञानसिंह बिष्ट बलिदान दिवस (आजाद हिन्द फौज के सेनानी)
18 मार्च,	'भारत में अंग्रेजी राज' पुस्तक की प्रकाशन तिथि (आजादी का प्रेरणादायी ग्रन्थ)
19 मार्च, 1909	चारुचंद्र बोस पुण्यतिथि, क्रांतिवीर
20 मार्च, 1858	अवन्तीबाई लोधी बलिदान दिवस, स्वतंत्रता सेनानी
21 मार्च, 1916	भारत रत्न बिस्मिल्ला खां जयन्ती, शहनाई बादक
22 मार्च, 1971	भाई हनुमान प्रसाद पोद्दार पुण्यतिथि (धर्मग्रन्थों के प्रसारक)
23 मार्च, 1931	भगतसिंह बलिदान दिवस, स्वतंत्रता सेनानी
24 मार्च,	होलिका दहन व होली
25 मार्च, 1920	चमनलाल जी जयंती (झंडेवाला कार्यालय की पहचान)
27 मार्च, 1915	काशीराम बलिदान दिवस, स्वतंत्रता सेनानी
28 मार्च, 1866	संत अतर सिंह जयंती (सिख पन्थ के सेवक)
29 मार्च,1552	गुरु अंगददेव पुण्यतिथि (सिख पंथ के द्वितीय गुरु)
30 मार्च, 1897	अप्पा जी जोशी जयंती (संघ के सरकार्यवाह)
31 मार्च, 1971	नानासाहब भागवत पुण्यतिथि (संघ कार्यकर्ता)

हमारे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से जुड़ने के लिए स्कैन करें

प्रेरणा विचार पत्रिका की सदस्यता लेने के लिए स्कैन करें

पाठकगण प्रेरणा विचार पत्रिका के बारे में अपने सुझाव एवं प्रतिक्रिया, 'संपादक के नाम पत्र' शीर्षक से हमारी ई-मेल आईडी (prernavichar@gmail.com) या वाट्सएप नम्बर (9354133708) पर भेज सकते हैं। चुने हुए पत्रों को पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

@PRERNAVICHAR

+919354133708

RNI No. : UPHIN/2023/84344 Postal Reg No. : DL (DS)-61/MP/2023-24-25

BHAURAV DEVRAS SARASWATI VIDYA MANDIR

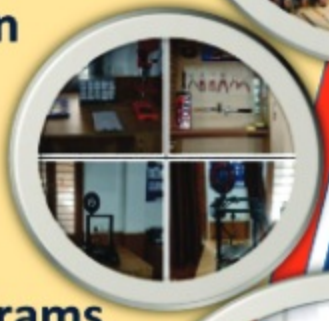

- Digital Library
- Atal Tinkering Laboratory
- Well Equipped Laboratories
- All Sports Activities
- Studio for Smart Education
- Value Based Education
- Easy Transport options from most suburbs
- Unique & Innovative Programs
- Modern Resources & Technologies

H-107, Sector-12, NOIDA
E-Mail: bdsvidyamandir@gmail.com
Contact No. 0120-4238317, 9910665195